लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संवाद

सप्तम अंक (सितंबर 2025)

महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना)
नई दिल्ली का कार्यालय

तृतीय तल, 'ए' स्कंध, इन्द्रप्रस्थ भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली - 110002

कार्यालय की गृह पत्रिका
‘संवाद’ के ‘षष्ठम’ अंक का लोकार्पण

संवाद समिति

श्री प्रमोद कुमार
अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

श्री अजय कुमार कृपाशंकर
निदेशक (प्रशासन)

सुश्री पूनम शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

डॉ. अनुराधा जोशी
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री अन्नू बाजपेई
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुप्रिया सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

संवाद पत्रिका परिवार

महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना) कार्यालय,
नई दिल्ली की अर्धवार्षिक पत्रिका

संरक्षक

श्री प्रमोद कुमार
अपर उप–नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, लेखापरीक्षा (अवसंरचना)

परामर्शदाता

श्री अजय कुमार कृपाशंकर
निदेशक (प्रशासन)

(सम्पादक)

सुश्री पूनम शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा)

(सह–सम्पादक)

डॉ0 अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

–:अस्वीकरण:–

रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे संरक्षक, परामर्शदाता तथा सम्पादक मंडल आदि का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुद्रक: एस. एस. इंटरप्राइजेज (9968882944)

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

अपर उप–नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का संदेश 05

निदेशक (प्रशासन) महोदय का संदेश 06

संपादकीय 07

क्र.सं.	विषय	रचना	रचनाकार का नाम एवं पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	जीवन का सफ़र	कविता	राजेश कुमार सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	08
2.	राजभाषा हिंदी : स्वरूप, स्थिति और महत्व	लेख	पूनम शर्मा सहायक निदेशक (राजभाषा	10
3.	कश्मीर – एक पर्यटक का सपना	कविता	सुप्रिया सिंह कनिष्ठ अनुवादक	13
4.	मेरा वो नमन शहीदे आज़म भगत सिंह को.....	लेख	मनोज मधुकर कस्तूर वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	15
5.	पिताः एक अनकहा प्रेम	कविता	पूनम शर्मा सहायक निदेशक (राजभाषा)	18
6.	श्री जगन्नाथ जी की यात्रा	यात्रा वृतांत	राजेश कुमार सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	20
7.	चाय की लत	नाटक	अमित कुमार लेखापरीक्षक	23
8.	अच्छे लोग भी मिल जाते हैं	कविता	नवीन लेखापरीक्षक	26
9.	कार्यालय और पर्यावरण जागरूकता	लेख	अन्नू बाजपेयी कनिष्ठ अनुवादक	28
10.	शरबत	कविता	राजा ओमर लेखापरीक्षक	33
11.	माँ-पापा चले गए और मैं सब कुछ बन गया	लेख	दुष्यंत कुमार लेखापरीक्षक	34
12.	राम नाम अति भाए	कविता	नवीन लेखापरीक्षक	35
13.	ग्रामीण किसान की व्यथा-संघर्ष से सम्मान तक	नुक्कड़ नाटक	संजय यादव सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	37
14.	पवित्र बंधन की अधूरी दास्तान	कविता	प्रभाकर प्रसाद सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	39
15.	भटका हुआ मुसाफिर	कहानी	अमित कुमार लेखापरीक्षक	40
16.	मेरी बेटी मेरा स्वाभिमान	कविता	प्रभाकर प्रसाद सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	45
17.	असली दुश्मन कौन है	लेख	मनोज मधुकर कस्तूर वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	46

18.	जब तू आया इस धरती पर	कविता	राजेश कुमार सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	49
19.	खिड़की की ओर	कहानी	संजय यादव सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	50
20.	पहलगाम आतंकी हमला	कविता	मनोज वत्स लेखापरीक्षक	53
21.	काश! मेरी गर्लफ्रेंड भी एक डबलएओ होती	कविता	मनोज मधुकर कस्तूर वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	55
22.	नैतिक मूल्यों का पतन	लेख	मेघा कौशिक वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	57
23.	शिक्षा का बोझ	कविता	महेश कुमार लेखापरीक्षक	59

कार्यालयीन गतिविधियाँ

पृष्ठ संख्या

1.	संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा इस कार्यालय की हिंदी निरीक्षण बैठक की तस्वीरें	61
2.	पखवाड़ा 2024 की झलकियाँ	62
3.	हिंदी पखवाड़ा समारोह- 2024 के विजयी प्रतियोगी	63
4.	हिंदी पत्रिका 'संवाद' के षष्टम अंक के लिए आपके पत्र	65
5.	कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला से सम्बंधित छायाचित्र	67
6.	कार्यालय के मनोरंजन क्लब की ओर से आयोजित दौरे की झलकियाँ	69
7.	कार्यालय द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिताओं की झलकियाँ	70
8.	राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर 26 जून 2025 को दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित समारोह के कुछ छायाचित्र	76

अपर उप–नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'संवाद' के सप्तम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने तथा रचनाकार, जोकि राजभाषा से प्रेम रखते हैं, उनकी प्रतिभा को निखारने का अवसर मिलता है। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका पाठकों को राजभाषा के प्रति जागरूक होने तथा राजभाषा को एक अनवरत गति एवं दिशा देने में सहायक सिद्ध होगी।

हमारी पत्रिका 'संवाद' राजभाषा की सेवा में निरंतर प्रयासरत रहे, यही मेरी मंगलकामना है।

(प्रमोद कुमार)
अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

निदेशक (प्रशासन) महोदय का संदेश

राजभाषा हिंदी हमारे देश की सभी भाषाओं को आबद्ध करने का सबसे सशक्त माध्यम है। यह सभी भाषाओं को समेकित करते हुए, आत्मसात करते हुए अग्रसर है। हमारी यह भाषा विभिन्न भाषा-भाषियों एवं हमारी सभ्यता और संस्कृति को जोड़े रखने का अथक कार्य करती है। राजभाषा विचारों और भावों की अभिव्यक्ति करने में पूर्णतः सक्षम है। यह प्रत्येक भारतवासी के मन में बसी भाषा है। हमारा संवैधानिक दायित्व भी है कि राजभाषा के प्रति सम्मान, आदर बनाए रखें तथा कार्यालयीन प्रयोग में भी राजभाषा को अग्रसर करने में अपना योगदान दें। थोड़े से ही सही पर शुरू तो कीजिए। मुझे अति विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों के मन में राजभाषा के प्रति भाव सृजित करने में सफल रहेगी तथा पाठकों के लिए एक ज्ञान स्रोत रहेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

(अजय कुमार कृपाशंकर)
निदेशक (प्रशासन)

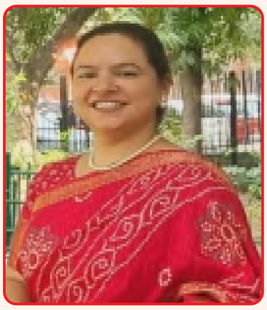

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

राजभाषा हिंदी को समर्पित इस कार्यालय की पत्रिका 'संवाद' का सप्तम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। संवाद केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि हृदय से हृदय तक पहुँचने वाली अनुभूति है। यह पत्रिका उसी सेतु का कार्य करती है जहाँ लेखक के भाव, कवि की कल्पना और विचारक का चिंतन पाठक की आत्मा को छू जाता है।

आज के समय में जब हर ओर तकनीक का शोर है, व्यक्ति अपने भीतर के स्वर को सुनना भूलता जा रहा है। ऐसे में साहित्य, कविता, लघुकथा, संस्मरण, शोध और विमर्श उसे अपने ही अंतर्मन से जोड़ने का कार्य करते हैं। यह अंक भी उसी प्रयास की एक कड़ी है। इसमें प्रस्तुत रचनाएँ आपको जीवन के विविध रंगों से परिचित कराएंगी– कहीं मानवीय करुणा का स्पर्श होगा, कहीं व्यंग्य की चुभन, कहीं विचारों की गंभीरता तो कहीं प्रेम की मिठास।

हमारा प्रयास हमेशा यह रहा है कि **'संवाद' केवल पत्रिका न होकर एक आंदोलन बने - विचारों का, भावनाओं का और नवसृजन का**। आप सभी पाठकों, रचनाकारों और शुभचिंतकों का स्नेह ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी है। हमें विश्वास है कि आपका यह सहयोग सदैव बना रहेगा और 'संवाद' अपनी गुणवत्ता, उद्देश्य और पाठकीय अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा।

अंत में, यही कहूँगी -

लिखते रहिए, पढ़ते रहिए और सबसे महत्वपूर्ण - महसूस करते रहिए, क्योंकि यही वास्तविक संवाद है।

सप्रेम,

पूनम शर्मा

सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन का सफ़र

जीवन एक किताब है, हर पन्ना एक दिन,
कभी हँसी की लहरें, तो कभी गम है शामिल
सपनों की नाव में, उम्मीदों का मलाल है,
हर मोड़ पर नया सबक, हर मंज़िल सवाल है।

सवेरा उम्मीदों से, शामें कुछ थकी-थकी,
बीच के ये लम्हें ही हैं,असली कहानी की।
कभी गिरना, फिर उठना, यही तो रीत है,
संघर्षों के साये में ही छिपी हर जीत है।

साथ कोई चले या न चलना चाहे,
अपने ही साये से मिलती है मंजिल की राहें
जो खोता है, वो भी सिखाता है,
और जो पाता है, वो भी आज़माता है।

ज़िंदगी की राहों में कांटे भी बहुत हैं,
मगर चलने वालों के बहाने भी बहुत हैं।
हर रात के बाद सवेरा ज़रूर आता है,
अंधेरों के सीने में उजाला कहां छुप पाता है

थोड़े से आँसू हैं, थोड़ी हँसी की बात है,
ज़िंदगी यूँ ही तो, एक रंगीन जज़्बात है।
जो गिरकर उठे, वही असली जीना जानते हैं,
वरना तो साँस लेना भी, लोग जीना मानते हैं।

जीवन कोई दौड़ नहीं, ठहराव भी ज़रूरी है,
हर मुस्कान के पीछे, कोई मजबूरी है।
तो चलो जिएं इसे, जैसे हो एक गीत,
हर लफ़्ज़ में भाव हो, हर धड़कन में प्रीत।

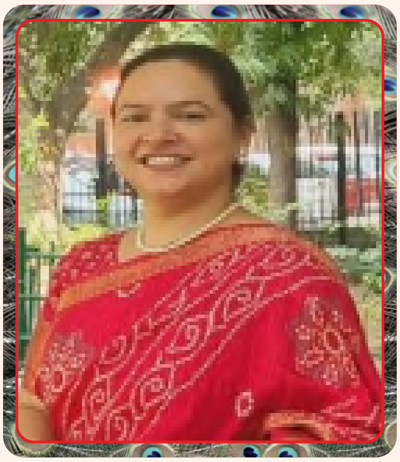

पूनम शर्मा,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा हिंदी : स्वरूप, स्थिति और महत्व

परिचय

हिंदी भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। यह मात्र संपर्क भाषा या जनभाषा ही नहीं, अपितु संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त भारत की राजभाषा भी है। हिंदी ने भारतीय एकता और प्रशासनिक संप्रेषण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। जिस पर हम सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए।

राजभाषा का संवैधानिक प्रावधान

भारतीय संविधान का भाग 17 (अनुच्छेद 343-351) राजभाषा से संबंधित है। अनुच्छेद 343(1) के अनुसार, "संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।" इसके अंतर्गत यह भी कहा गया कि-

- प्रारंभ में 15 वर्षों तक अंग्रेजी का प्रयोग भी किया जाएगा (1950 से 1965 तक)।
- इसके पश्चात हिंदी को पूर्णतः राजभाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास होगा।
- अनुच्छेद 351 में हिंदी के प्रसार व विकास की ज़िम्मेदारी केंद्र सरकार पर रखी गई है ताकि वह भारत की अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात कर, समृद्ध बने और राष्ट्र की अभिव्यक्ति का साधन बन सके।

हिंदी का वर्तमान राजभाषा स्वरूप

- राजभाषा हिंदी का स्वरूप मानक खड़ी बोली आधारित है, जिसकी लिपि देवनागरी है। आधुनिक हिंदी में :
- संस्कृत तत्सम शब्दों की प्रमुखता है।
- प्रशासनिक, विधिक और तकनीकी शब्दावली का व्यापक विकास हुआ है।
- हिंदी टर्मिनोलॉजी एवं शब्दों का निर्माण केंद्रीय हिंदी निदेशालय, राजभाषा विभाग तथा तकनीकी एवं शब्दावली आयोग के माध्यम से नियमित होता है।

हिंदी को राजभाषा बनाने के उद्देश्य

- प्रशासन को सरल, सुलभ और जनोन्मुख बनाना।
- भाषाई एकता और राष्ट्रीय एकात्मता को बल देना।
- विदेशी भाषा (अंग्रेजी) पर निर्भरता कम करना।
- भारत की सांस्कृतिक चेतना को संरक्षित व अभिव्यक्त करना।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास

- राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना।
- संसद में राजभाषा समितियाँ एवं राजभाषा विभाग का सक्रिय होना।
- तीन भाषा सूत्र केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण योजना, हिंदी दिवस (14 सितंबर) जैसे कार्यक्रमों का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन।
- केंद्रीय व राज्य कार्यालयों में टिप्पण, प्रारूपण, प्रतिवेदन, अधिसूचनाओं, शासकीय आदेशों का हिंदी में लेखन।

राजभाषा हिंदी की चुनौतियाँ

- प्रशासन में अंग्रेजी का वर्चस्व अब भी बना हुआ है।
- गैर-हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी का सीमित व्यवहार होना।
- तकनीकी, वैज्ञानिक और विधिक क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली का प्रचार-प्रसार अपेक्षित स्तर पर नहीं हो पाया है।
- अंग्रेज़ी के प्रति अभिजात वर्ग का आकर्षण और 'प्रेस्टीज सिंबल' होना।

राजभाषा हिंदी की उपलब्धियाँ

- आज भारत की 80 करोड़ से अधिक जनता हिंदी समझती और बोलती है।
- संयुक्त राष्ट्र सहित कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी का उपयोग किया जा रहा है।
- सूचना प्रौद्योगिकी, यूट्यूब, सोशल मीडिया, समाचार पोर्टल्स पर हिंदी की व्यापकता देखी जा सकती है।
- हिंदी फिल्मों, साहित्य, पत्रकारिता और विज्ञापन जगत का बहुप्रभावी विस्तार सर्वव्यापी है।

राजभाषा की उपेक्षा करने के परिणाम

विश्व के प्रत्येक विकसित राष्ट्र में एक बात समान है, उन्होंने अपनी भाषा को सदैव मान्यता दी है और वह किसी भी विदेशी भाषा के मोह में बंधे नहीं रहे। अपनी भाषा में शिक्षा-दीक्षा, रोज़गार इन देशों की सदैव प्राथमिकता रही है। एक राष्ट्र में संभवतः अनेक भाषाएँ बोली जा सकती हैं, किंतु राष्ट्र को पहचान देने वाली किसी एक लोकप्रिय भाषा का होना भी अनिवार्य है। वैसे तो हमारे संविधान द्वारा 22 भाषाओं को राजभाषाओं

का दर्जा प्राप्त है। किंतु इन सभी भाषाओं में यदि कोई एक भाषा है जो पूरे राष्ट्र में पढ़ी, लिखी या समझी जा सकती है तो वह निर्विवाद रूप से हिंदी ही है और यदि हम ऐसी भाषा का तिरस्कार करेंगे या उसको किसी अन्य विदेशी भाषा से कमतर आँकेंगे जोकि विश्व धरातल पर तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, तो यह हमारे राष्ट्र के उत्थान के लिए एक नकारात्मक दृष्टिकोण रहेगा। इससे हमें बचना चाहिए।

निष्कर्ष

हिंदी मात्र भाषा नहीं, भारत की सांस्कृतिक पहचान है। राजभाषा के रूप में इसकी स्थिति संविधान की भावना के अनुरूप प्रशासनिक, शैक्षिक और व्यावसायिक जीवन में सशक्त होनी चाहिए। अंग्रेज़ी के साथ स्वस्थ सह-अस्तित्व रखते हुए हिंदी को जन-जन की राजभाषा बनाने के लिए हमें इसके प्रचार, व्यवहार और तकनीकी शब्दावली विकास पर विशेष बल देना होगा। तभी हिंदी राष्ट्र की संपूर्ण अभिव्यक्ति की भाषा बन सकेगी।

जय राजभाषा हिंदी, जय भारत!

सुप्रिया सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

कश्मीर – एक पर्यटक का सपना

घाटियों में गहरी, नदियाँ चमकती हैं,
कश्मीर है, एक पर्यटक की मंज़िल सजीव।
बर्फ़ से ढके पर्वत सफेद उजाले,
सुबह की रोशनी में कहानियाँ सुनाते।

गुलमर्ग की बर्फीली चादरें,
जहाँ खिलते हैं सपनों के पहाड़।
स्कीइंग के मैदान, सफेद समंदर,
हर पल यहाँ है आनंद की साज़।

दूधपथरी की ठंडी ठंडी हवा,
नीले आसमां के नीचे खुला मैदान,
जहाँ हरियाली है अनमोल कहानी।
दूध की तरह साफ़ ये वादियाँ,
हर कदम पर है प्रकृति की वाणी।

केसर के खेत और सेब के बाग,
हल्की हवा में मचलते जैसे सौगात।
डल झील पर शिकारे धीरे बहते,
चित्र जैसे, शांति से बहते।

चिनार के पत्ते पतझड़ में रंगीले,
लाल और सुनहरे, खूबसूरत नज़ारे।
सुगंधित पाइन और देवदार की खुशबू,
प्रकृति की ये सुंदरता, सच है खरा।

मुगल बागों में इतिहास के गीत,
रंगीन बाजारों में भीड़ की रीत।
हर कदम पर मिलता है एक जादू,
कश्मीर का आकर्षण, दिल को भाए सदा।

कश्मीर के बागों का है एक नन्हा मोती,
इतिहास और प्रकृति को अनुपम जोड़ी।
चश्मे शाही में बहती है सुकून की नदी,
जो हर यात्री के मन को दे आबादी।

एक ऐसी धरती जहाँ दिल आराम पाए,
कश्मीर में हर यात्री को मेहमान बन पाए।
खुले दिल से ये पुकारता है तुम्हें
आओ देखो स्वर्ग का ये सजीला दृश्य।

मनोज मधुकर कस्तूर
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा वो नमन शहीदे आज़म भगत सिंह को.....

नमस्कार! मित्रो,

इस लेख में, मैं अपनी बठिंडा यात्रा के दौरान हुए एक बहुत ही भावुक और मेरे दिल को छू गए अनुभव को, आप सभी के साथ साझा कर रहा हूँ। जिसे मैंने नाम दिया है 'मेरा वो नमन शहीदे आज़म भगत सिंह को', तो इस बार मेरे साथ, आप सब भी चलिए इस यात्रा पर....

अपने बठिंडा दौरे के आखिरी दिन (28 जून 2025) की शाम को मुझे बठिंडा शहर से लगभग 120 किलोमीटर दूर भारत-पाकिस्तान अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास पंजाब के फिरोज़पुर जिले के हुसैनीवाल गांव में स्थित स्वतंत्रता सेनानी शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के बलिदान की याद दिलाते सतलुज नदी के किनारे स्थित राष्ट्रीय शहीद स्मारक पर जाने का मौका मिला। अपनी बठिंडा यात्रा से पहले तक मुझे इस स्थान के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। परन्तु जब मुझे इस स्थान और उससे जुड़े ऐतिहासिक महत्व के बारे में पता चला, तो मैं अपने आपको इस स्थान पर जाने से नहीं रोक पाया। मुझे पहुँचते-पहुँचते लगभग पौने सात बज गए थे। अपनी गाड़ी से उतर कर सबसे पहले, मैं इस शहीद स्थल पर हमारे महान शहीदों को श्रद्धांजलि देने गया। यहाँ पर शहीद भगत सिंह जी के साथ-साथ उनकी माता श्रीमती विद्यावती जी और बटुकेश्वर दत्त(अन्य महान क्रांतिकारी) की समाधि भी है। बताते हैं कि अंग्रेजों द्वारा 23 मार्च 1931 को फांसी देने के बाद हमारे शहीद वीरों को लाहौर स्थित जेल में ही दफनाया गया था। वर्ष 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता हासिल करने के बाद, यह जगह पाकिस्तान वाले हिस्से में चली गई थी। जिसकी वजह से हमारे देश में लोग काफी नाराज़ थे और 1950 में उनकी इस नाराज़गी को दूर करने के लिए नेहरू-नून भूमि समझौते के तहत पाकिस्तान से हमारे शहीद स्वतंत्रता सेनानियों की समाधि वापस अपने देश में लाने का फैसला लिया गया। जिसके तहत, भारत सरकार ने फाजिल्का(पंजाब) के 12 गाँव, पाकिस्तान को देकर इस राष्ट्रीय शहीद स्थल को 17 जनवरी 1961 को अपने देश में शामिल किया। जिसका निर्माण वर्ष 1968 में किया गया। हर वर्ष 23 मार्च को हमारे स्वतंत्रता सेनानी शहीद

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के बलिदान की याद में, यहाँ 'शहीदी मेला' भी आयोजित किया जाता हैं। अब वापिस आते हैं हमारी यात्रा पर, शहीद स्थल के मुख्य द्वार से अन्दर प्रवेश करते ही सामने (पार्क के दूसरी तरफ), स्वर्ण रंग से निर्मित अपने महान वीरों के मुख देख कर एक अलग सी अनुभूति हुई। थोड़ा आगे बढ़ते ही, हमारे दाईं तरफ एक ट्रेन का कोच था, जहाँ शायद इसके इतिहास से जुड़ी वर्चुअल स्टोरी बताई जाती हो, परन्तु वो उस वक्त बंद था। उस जगह से आगे बढ़कर मैं सीधा मुख्य दीवार की तरफ गया जहाँ, दाईं तरफ एक दिव्य ज्योत जल रही थी। वहां कुछ समय बिता कर मैं बाईं तरफ बने रास्ते की तरफ बढ़ चला और उस स्थल की मुख्य प्रतिमा के पास पहुंचा जहाँ हमारे वीरों के समकक्ष स्वरुप को अंग्रेजों के खिलाफ नारे लगाते हुए दर्शाया गया है। वहां पर पहुँच कर लगा कि, मानो वो अभी बोल उठेंगे, क्या माहौल रहा होगा? उस आज़ादी से पूर्व समय में, जब कैसे हमारे वीरों ने सत्ता के विरुद्ध निडर आवाज़ उठाई? और अपने देशप्रेम के लिए हँसते-हँसते फांसी पर चढ़ कर, हमेशा के लिए अपना नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज करा गए।

उसके पश्चात मैं, पार्क के बिल्कुल केंद्र में स्थित स्थान पर गया जहाँ हमारे वीर, इतने वर्षों बाद भी आराम से माँ धरती की गोद में निद्रामग्न हैं। वहां पर भी एक दिव्य ज्योत जल रही थी, पार्क का पूरा 360 डिग्री चक्कर लगाने के बाद मैं उस स्थान पर आया और हाथ जोड़ कर अपने शहीद वीरों को प्रणाम किया। सभी लोग वहां आकर उन वीरों को प्रणाम कर, परिक्रमा लगा कर वापिस जा रहे थे। मैंने भी उस पवित्र स्थान की परिक्रमा पूरी की, कि दिल से आवाज आई कि मुझे यहाँ अपना माथा भी टेकना चाहिए, भले ये कोई मंदिर या गुरुद्वारा न हो पर अपने शहीद वीरों के चरणों में, मैं इतना तो कर ही सकता हूँ। मुझे यह सोच कर थोड़ी झिझक हो रही थी, क्योंकि वहां से गुज़रने वाले किसी भी इंसान को मैंने ये करते हुए नहीं देखा था। वक्त गुज़रता जा रहा था और मैं इसी कश्मकश में वहीं खड़ा हुआ, आते-जाते लोगों को देख रहा था। हर गुज़रते लम्हे में, मेरे दिल और मेरी झिझक में रस्साकशी बढती जा रही थी। लगभग 3-4 मिनट तक मैं यूंही खड़ा रहा। उस वक्त अपने अन्दर के तूफान को किसी तरह संभाले हुए, मैं अपने दोनों हाथ जोड़े एकदम मौन खड़ा था और वहां से गुज़रते हुए लोग मुझे देखते हुए आगे बढ़ रहे थे। जहाँ कुछ दिन पहले तक, मैं इस जगह के बारे में जानता तक नहीं था, अब मेरे दिल और दिमाग में एक युद्ध छिड़ा हुआ था। मैंने आज तक, कभी किसी भी स्थान पर, इस तरह की जद्दोजहद नहीं महसूस की थी। मेरा दिमाग कह रहा था क्यों माथा टेकना?, सोचो कि लोग क्या कहेंगे? ये तो सिर्फ एक समाधि स्थल है। वहीं पर दिल कह रहा था कि, ये उन वीरों का पवित्र स्थान है, जिनकी कहानियाँ सुनते हुए हम बड़े हुए हैं और मेरे लिए ये जगह किसी मंदिर से कम नहीं है। वहीं दूसरी तरफ़ मेरी झिझक, जिसमें अक्सर मैं अपने सामने से गुज़रते अपने देश के जवानों को देखकर, अपना मस्तक उनके सम्मान में झुका तो लेता हूँ पर वो इज्ज़त कभी उनके सामने नहीं दिखा पाया था, जिसका प्रमाण आज तक मेरे द्वारा, उनको कभी भी सैल्यूट न कर

पाने का मलाल है। जैसे ही मेरे मन में यह विचार आया कि, शायद मैं यहाँ फिर कभी वापिस न आ पाऊं और ये मौका फिर जीवन में कभी न मिले। मैंने अपने दिल की सुनते हुए, झिझक को थोड़ा दूर करते हुए अपने कदम बढ़ा, अपना सर उन महान वीरों के चरणों में झुकाया और उस पवित्र स्थान को अपने माथे से लगाया। उस पल मानो मेरा मन इतना हल्का महसूस कर रहा था, जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो, बल्कि पीछे गुज़रे कुछ पलों में, मैंने न जाने कितने अनगिनत विचारों को आपस में युद्ध करते हुए देख लिया था। इन कुछ पलों में इतना सब कुछ हो चुका था, कि मुझे ये तो पता चल गया था कि ये अनुभव कोई सामान्य अनुभव तो कतई नहीं है। मैं अपनी नौकरी में अक्सर विभिन्न जगहों पर आता जाता रहता हूँ और समयानुसार वहां पर स्थित एक दो ऐतिहासिक जगहों पर भी जा पाता हूँ। परन्तु कभी भी इस तरह का कोई अनुभव नहीं हुआ, शायद भगवान ने हमारे शहीदे आज़म के द्वारा ही ये फैसला कराना था कि मुझे अपनी कश्मकश पर विजय, यहाँ शहीदे आज़म भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के चरणों में नमन करने पर ही मिलनी थी। शायद आप सभी के लिए, यह सिर्फ एक सामान्य अनुभव हो सकता है, परन्तु इस कश्मकश और झिझक वाली विडंबना में उलझ कर, मौके पर फैसला न ले पाने का एहसास, वो लोग ही समझ सकते हैं जिन्होंने जीवन में इस पर विजय पाने से पहले स्वयं को इस मझधार में कभी न कभी फंसा पाया हो।

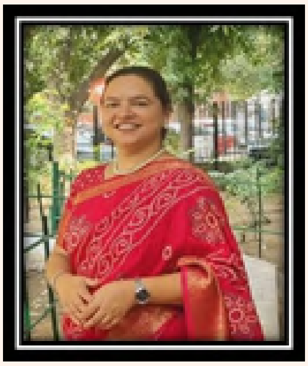

पूनम शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

पिताः एक अनकहा प्रेम

पिता...

एक ऐसा शब्द जो सुनते ही ज़िम्मेदारी, कठोरता और अनुशासन का बोध कराता है, परंतु उसके भीतर छुपा प्रेम और त्याग कम ही दिखाई देता है।

पिता वो है,
जो खुद धूप में चलता है ताकि उसका बच्चा छांव में रह सके।
जिसने अपनी सारी इच्छाओं को इसलिए दबा दिया,
ताकि उसकी संतान की एक भी इच्छा अधूरी न रह जाए।
पिता वो है,
जो अपने आंसुओं को चुपचाप पोंछ लेता है,
क्योंकि उसे मज़बूत दिखना है।
क्योंकि उसके आँसू अगर बह गए,
तो घर की हिम्मत टूट जाएगी।
पिता का प्रेम अक्सर शब्दों में नहीं उतरता।
वह न तो हर पल, गले लगाकर कहता है 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ',
न ही हर बार मुस्कान के साथ अपनी भावनाएँ व्यक्त कर पाता है।
लेकिन उसका दिन-रात का संघर्ष,
उसका हर निर्णय,
हर त्याग,

हर चुप्पी यही कहती है
"तुम्हारी खुशी ही मेरी सबसे बड़ी खुशी है।"
बचपन में जब साइकिल चलाते हुए गिर जाते थे,
तो माँ डांटती थी,
और पिता चुपचाप पीछे से साइकिल पकड़ लेते थे।
पिता जानते थे, गिरना ज़रूरी है,
पर संभालना भी।
आज जब हम बड़े हो गए हैं,
तो पिता का झुकता कद,
सफेद होते बाल,
कमज़ोर होती कमर, हमें यह बताती है कि
वह वक्त भी आता है जब
हमारे 'हीरो' को हमारे सहारे की ज़रूरत होती है।
पिता...
वो छाया है,
जो कभी दिखती नहीं,
पर उसके बिना जीवन की तपती दोपहरें काटी नहीं जा सकतीं।

राजेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री जगन्नाथ जी की यात्रा

सनातन धर्म में चार धाम यात्रा एक महत्वपूर्ण तीर्थयात्रा है। यह चार पवित्र स्थलों बद्रीनाथ, द्वारिका, रामेश्वरम और जगन्नाथ पुरी की यात्राएं है। ये चारों धाम चार दिशाओं में स्थित हैं, उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पूर्व में पुरी और पश्चिम में द्वारिका।

इस वर्ष मुझे चारों धामों में से एक धाम श्री जगन्नाथ पुरी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भगवान जगन्नाथ मंदिर की यह यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव है। यह धाम ओडिशा राज्य के पूवी तट पर पुरी में स्थित है और भगवान जगन्नाथ को समर्पित है। मंदिर में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां विराजमान हैं। जगन्नाथ भगवान विष्णु का एक रूप है, जबकि बलभद्र को उनके बड़े भाई और सुभद्रा को उनकी बहन माना जाता है। मंदिर की भव्यता, धार्मिक महत्व और वार्षिक रथयात्रा इसे एक लोकप्रिय तीर्थस्थल बनाते हैं।

दुनियाभर के श्रद्धालु हर साल आयोजित होने वाली पुरी रथयात्रा में जाने के लिए काफी उत्सुक नजर आते हैं। चार धामों में से एक पुरी में भगवान जगन्नाथ का मंदिर है और यहां पर पूरे साल भक्तों की अच्छी खासी भीड़ दिखाई देती है। जगन्नाथ मंदिर, पुरी का एक प्राचीन मंदिर है, जो भगवान जगन्नाथ विष्णु के रूप को समर्पित है। इसका इतिहास महाभारत काल से जुड़ा है, जब राजा इंद्रद्युम्न ने भगवान विष्णु के अवतार नीलमाधव की मूर्ति की स्थापना की थी। मंदिर को 10वीं शताब्दी में चोडगंगा वंश के राजा अनंतवर्मन चोडगंगा ने बनवाया था। यह वैष्णव धर्म के लिए एक महत्वपूर्ण मंदिर है, जो भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण को समर्पित है। इसके संस्थापक श्री चैतन्य महाप्रभु भगवान की ओर आकर्षित हुए थे और कई वर्षों तक पुरी में रहे थे।

जगन्नाथ पुरी मंदिर परिसर में कई तरह की संरचनाएँ और विशेषताएं हैं, जिनमें मुख्य मंदिर, रत्न भंडार और अन्य छोटे मंदिर शामिल हैं। परिसर के अंदर एक रसोईघर, उद्यान, कुएं और एक पवित्र बरगद का पेड़ भी है। यह मंदिर कलिंग स्थापत्य शैली में बना है और इसमें विमान, जगमोहन, नट मंडप और भोग मंडप जैसे भाग हैं। मंदिर के तहखाने में रत्न भंडार स्थित है, जिसमें भक्तों और पूर्व राजाओं द्वारा दान में दिए गए बहुमूल्य आभूषण रखे हुए हैं। मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार पर 22 सीढ़ियां हैं, जिन्हें ''बैसी पहाचा'' कहा जाता है। माना जाता है कि

ये सीढ़ियां मानव जीवन की 22 कमजोरियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

मंदिर में स्थापित मूर्तियाँ लकड़ी से बनी हैं, जो इसकी एक अद्वितीय विशेषता है। मंदिर में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की अधूरी मूर्तियों की पूजा की जाती है, जो एक अनोखी विशेषता है। पुरी के जगन्नाथ मंदिर में, श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियाँ हर 12 साल में बदली जाती हैं, जिसे 'नवकलेवर' कहा जाता है। नवकलेवर का अर्थ है 'नया शरीर' और यह परंपरा जगन्नाथ मंदिर में स्थापित मूर्तियों को हर 12 साल में बदलने के लिए है, क्योंकि ये लकड़ी से बनी होती हैं और खराब होने की संभावना होती है। जब भी यह परंपरा निभाई जाती है, तो पूरे शहर की बिजली काट दी जाती है और मंदिर के आसपास के वातावरण में अंधेरा कर दिया जाता है। मूर्ति बदलने वाले पुजारी इस दौरान आंखों पर पट्टी बांध लेते हैं और हाथों में कपड़े लपेट लेते हैं। बगैर देखे और बिना स्पर्श किए, वे पुरानी मूर्ति में से 'ब्रह्म' को निकालकर नई मूर्ति में स्थापित करते हैं।

यात्रा के क्रम में हम भुवनेश्वर से सड़क मार्ग से होते हुए लगभग 70 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद 2 घंटे में पुरी पहुंच जाते हैं। सड़क मार्ग से जाने पर मंदिर से लगभग 400-500 मीटर पहले मल्टीलेवल पार्किंग है वहां गाड़ी पार्क करके ई-रिक्शा से मंदिर के पास पहुंच गए। श्री जगन्नाथ जी के दर्शन के लिए लाखों श्रद्धालु प्रतिदिन आते हैं, इस वजह से वहां बहुत भीड़ थी और लंबी कतार लगी थी। लगभग एक घंटे के बाद हम मंदिर के अंदर पहुंचे और दर्शन की कतार में लग गए। श्री जगन्नाथ जी के दर्शन करने के बाद प्रभु की आरती करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। मंदिर के अंदर तीन मुख्य मूर्तियों के अलावा सुदर्शन चक्र(श्री जगन्नाथ जी का चक्र), मदनमोहन(भगवान कृष्ण का एक रूप), श्रीदेवी(लक्ष्मी का एक रुप) और विश्वधात्री(सृष्टि एवं पालनहार की देवी) की प्रतिमाएं भी विराजमान हैं। मंदिर के प्रांगण में ही चारो तरफ अनेक देवी देवताओं के मंदिर एवं अनेक कलाकृतियां विद्यमान हैं। मंदिर परिसर में माता महालक्ष्मी का मंदिर, माता बिमला देवी का मंदिर और कई अन्य धार्मिक स्थल भी हैं, जिन्हें देखते हुए हम मुख्य मंदिर से बाहर आ गए।

मुख्य मंदिर से बाहर आने पर थोड़ी ही दूरी पर महाप्रसाद वितरण किया जाता है। जगन्नाथ जीवक महाप्रसाद, भगवान जगन्नाथ को अर्पित किया जाने वाला एक पवित्र प्रसाद है, जो जगन्नाथ मंदिर में बनता है। इसे महाप्रसाद कहा जाता है और यह भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा को अर्पित करने के बाद भक्तों में वितरित किया जाता है। यह प्रसाद न केवल भोजन है, बल्कि भगवान का आशीर्वाद और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। यहां से हमने महाप्रसाद का आनंद लिया और फिर मंदिर की सुंदरता देखते हुए बाहर की तरफ निकल गए। मंदिर से बाहर आने के बाद हमने कुछ तस्वीरें खींची क्योंकि मंदिर के अंदर मोबाइल फोन एवं चमड़े की वस्तुएं प्रतिबंधित हैं।

श्री जगन्नाथ जी धाम में ली गई कुछ तस्वीरें।

पुरी में हर साल रथयात्रा आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को शुरू होती है और 9 दिनों तक चलती है। यह एक महत्वपूर्ण उत्सव है जिसमें भगवान जगन्नाथ अपने भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा अलग-अलग रथों पर सवार होकर यात्रा पर निकलते हैं। यह यात्रा पुरी से शुरू होकर गुंडीचा मंदिर तक जाती है, जो भगवान जगन्नाथ की मौसी का घर माना जाता है। रथयात्रा के दौरान रथों को खींचने और दर्शन करने के लिए भक्तों की अच्छी खासी भीड़ दिखाई देती है।

श्री जगन्नाथ मंदिर के अनेक रहस्य है। मंदिर के शिखर पर स्थित ध्वज हमेंशा हवा की विपरीत दिशा में लहराता है, जो विज्ञान के लिए एक रहस्य है। मंदिर के गुंबद की परछाई कभी नहीं बनती है और न ही गुंबद के पास कोई पक्षी उड़ पाता है। पुरी में, दिन के समय हवा ज़मीन से समुद्र की ओर चलती है और शाम को इसके विपरीत होता है, जो अन्य समुद्री तटों पर आम तौर पर नहीं होता है। मंदिर के सिंह द्वार में प्रवेश करने पर समुद्र की आवाज सुनाई नहीं देती है और बाहर की गंध भी महसूस नहीं होती है। मंदिर के शीर्ष पर सुदर्शन चक्र स्थापित है और माना जाता है कि यह किसी भी स्थान से देखने पर हमेशा आपके सामने ही दिखाई देता है।

श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी एक प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर है जो हिंदू धर्म के लिए महत्वपूर्ण है। यह वैष्णव धर्म, चार धाम यात्रा और रथ यात्रा उत्सव के लिए जाना जाता है। मंदिर की वास्तुकला, प्रसाद इसकी सुंदरता के महत्व को बढ़ाते हैं। भगवान जगन्नाथ मंदिर की यह यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव है।

अमित कुमार
लेखापरीक्षक

चाय की लत

(एक हास्यपूर्ण घरेलू नाटक जिसमें चाय को लेकर घर में मचती है खलबली!)

पात्र

राजेश - पति, स्वास्थ्य सनकी, चाय का विरोधी

सुमन - पत्नी, कट्टर चाय प्रेमी

माँ(राजेश की माँ) - समझदार, शांत स्वभाव

पिंकी(बेटी) - 12 साल की नटखट

बबलू(पड़ोसी) - बिन बुलाए आने वाला, चाय प्रेमी

स्थान : एक मध्यमवर्गीय घर की बैठक और रसोईघर

दृश्य 1 : सुबह का समय, बैठक में राजेश अख़बार पढ़ रहे हैं

राजेश(नाक सिकोड़ते हुए, बड़बड़ाते हैं): अरे बाप रे! फिर से चाय की खुशबू! कसम से, ये घर नहीं चाय की फैक्ट्री है।

सुमन(रसोई से आवाज़ लगाती हैं): क्या कहा? कुछ चाहिए?

राजेश(ज़ोर से): हाँ! चाहिए इस चाय की आदत से मुक्ति! तुम दिन में पाँच बार चाय पीती हो, कहीं कैफीन वाली कार चला रही हो क्या?

सुमन(हाथ में ट्रे लेकर आती हैं): हा हा हा! चाय मेरी कार नहीं, ईंधन है। तुम्हें तो केवल स्वास्थ्य की पड़ी है। शादी से पहले तो बोलते थे तेरी हर चीज़ प्यारी लगती है.अब तो तुम्हें मेरी चाय भी बुरी लगने लगी?

राजेशः हाँ क्योंकि तब पता नहीं था कि 'हर चीज़' में दिन की सात चाय शामिल हैं! चाय में चीनी, फिर बिस्किट, फिर वज़न का बढ़ना ... फिर डॉक्टर का बिल!

सुमन (चिढ़कर): तो क्या करूं? तुम्हारे अंकुरित अनाज खा-खा कर मेरा जी भर गया है। चाय न हो तो मेरा दिमाग काम ही नहीं करता!

दृश्य 2 : माँ एंट्री लेती हैं

माँ(हँसते हुए): अरे अरे! तुम दोनों फिर शुरू हो गए? राजेश बेटा, तू भूल गया कि तू भी कॉलेज के समय में बिना चाय के परीक्षा में नहीं बैठता था!

राजेश(शर्माते हुए): माँ! वो पुरानी बात है... अब तो मैं स्वास्थ्य को गंभीरता से लेता हूँ।

माँ: तभी तो सुबह-सुबह अख़बार में भी 'चाय नुक़सानदेह' वाली खबरें ढूँढता है! चलो छोड़ो, बहू, एक कप चाय मुझे भी दे दो... अदरक वाली!

दृश्य 3 : बेटी पिंकी एंट्री करती है

पिंकी(स्कूल यूनिफॉर्म में): मम्मा! मेरे टिफिन में चाय डाली क्या?

राजेश(हैरान): क्या?? बच्ची के टिफिन में चाय?

पिंकी(हँसते हुए): अरे पापा! मज़ाक कर रही हूँ! पर सच कहूँ, मम्मा की चाय से सारा तनाव गायब हो जाता है... और गणित भी आसान लगने लगता है!

राजेश (व्यंग कसते हुए): हे भगवान! अब तो चाय को दैवीय शक्ति मान लिया गया है!

दृश्य 4 : पड़ोसी बबलू बिना बुलाए आ धमकते हैं

बबलू(चहकते हुए): नमस्ते जी! सुमन भाभी, चाय बन रही है क्या?

राजेश(गुस्से में): बबलू! तुम हर रोज़ कैसे सूँघ लेते हो कि चाय बन रही है?

बबलू राजेश: भैया, चाय की खुशबू और सरकारी अफ़सर की छुट्टी छुपाए नहीं छुपती!

सुमन(हँसते हुए): आइए बबलू जी, अदरक इलायची वाली चाय तैयार है!

राजेश(नाक पकड़े हुए): बस! मैं हार गया, तुम सब मिलकर एक 'चाय यूनियन' बना लो... और मुझे सदस्यता मत देना।

अंतिम दृश्य : सभी साथ बैठकर चाय पी रहे हैं

राजेश (चाय की प्याली थामते हुए, मुस्कुराकर): चलो ठीक है... एक प्याली पी ही लेता हूँ...
लेकिन वादा करो अगली चाय में तुलसी डालोगी!

सुमनः तुलसी क्या, तुम्हारे लिए तो हल्दी, लौंग और थोड़ी मोहब्बत भी डाल दूंगी!

पिंकीः और थोड़ा दही भी डाल दो... ताकि हेल्दी लस्सी बन जाए!

(सब ठहाका लगाते हैं और पर्दा गिरता है)

नाट्य सारांशः (घर में जब चाय का मुद्दा छिड़ता है, तो तर्क-वितर्क से ज़्यादा ज़रूरत होती है, तो बस एक प्याली हँसी और ढेर सारी समझदारी की।)

नवीन
लेखापरीक्षक

अच्छे लोग भी मिल जाते हैं

मैं जिस कमरे में रहता हूँ
उसमें बस इक खिड़की है
जो कि अक्सर बन्द रहती है
दो मौकों पर खुलती है
एक तो जब कमरे की उदासी
बाहर जाना चाहती हो
एक कि जब कोई नई उदासी
अंदर आना चाहती हो

जब भी मैंने इस खिड़की से
बाहर झाँक के देखा है
सब कुछ दर्द भरा दिखता है
जो और दुखी कर देता है
जैसे सूरज की गर्मी का
खिलते फूलों को झुलसाना

जैसे कुछ बूंद बरस कर ही
बारिश का यूँ ही रुक जाना
जैसे कि पेड़ से पंछी का
बेमतलब रुठ के उड़ जाना
जैसे नदियों का सागर में
गिरने से पहले मुड़ जाना

यही वो मंज़र है जो मुझको
बीते दिन याद दिलाते हैं
बस इसीलिए ये पाँव मेरे
कमरे में रहना चाहते हैं
पर आज बड़ी हिम्मत से मैं
कमरे से बाहर आया हूँ

इक ऐसा शख़्स मिला मुझको
जिससे बातें कर पाया हूँ
वो शख़्स कि जिसने मेरी हर
ख़ामोशी को पहचान लिया
वो शख़्स कि जिसने मेरे हर
गम को भी अपना मान लिया
वो शख़्स कि जिसने मुझको
हँसने की आदत लगवाई
गालों पर बहते आँसू की
हर एक पहेली सुलझाई
जब आज उस शख़्स से मिलकर मैं
कमरे में वापस लौट गया

जब खिड़की खोलके देखा तो
मैं सचमुच में ही चौक गया
उस खिड़की से मुझको बस अब
सब अच्छा-अच्छा दिखता है
वो जो सब पहले दिखता था
अब बदला बदला दिखता है
जैसे सूरज की किरणों का
फ़ूलों की गर्दन सहलाना

जैसे बारिश का मिट्टी में
मिलकर के खुशबू बन जाना
जैसे पेड़ो पर पंछी का
खुश होकर वापस आ जाना

जैसे नदियों का सागर से
मिलकर के सागर हो जाना
अब मैं भी रोना छोड़के बस
खुशियों की बाते करता हूँ
बागों में उठता बैठता हूँ
कलियों से बातें करता हूँ

मैं मान गया कि कभी कभी
सहरा में फूल भी खिल जाते हैं
अच्छे लोग भी मिल जाते हैं

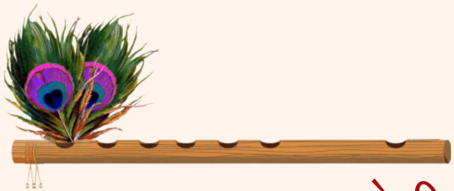

अन्नू बाजपेयी
कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय और पर्यावरण जागरूकता

'पचमामा एलायंस' जो कि एक वैश्विक संगठन है तथा पर्यावरण के क्षेत्र में अपने अध्ययन और कार्यों के लिए जाना जाता है; के अनुसार "पर्यावरणवाद एक विचारधारा है जो प्राकृतिक दुनिया को उसके मानवजनित कष्टों से बचाने, उसका सम्मान करने, उसकी रक्षा करने एवं उसे सुरक्षित रखने की आवश्यकता और ज़िम्मेदारी को उजागर करती है। 'पर्यावरण जागरूकता' का अर्थ है हमारे पर्यावरण की नाजुकता, उस पर मानव व्यवहार का प्रभाव और उसकी सुरक्षा एवं संरक्षण के महत्त्व को समझना"।

पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देना, पर्यावरण संरक्षक बनने और अपने बच्चों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य बनाने में भाग लेने का एक सुलभ तरीका है।

अपने दोस्तों, परिवार और एक सरकारी संगठन से जुड़े होने के नाते हम सबका यह कर्तव्य बन जाता है कि अपने आसपास के लोगों को यह बताकर कि भौतिक पर्यावरण नाजुक और अपरिहार्य है, हम उन समस्याओं को ठीक करना प्रारंभ कर सकते हैं जो इसे खतरे में डालती है।

भारत में पर्यावरण के प्रति जागरूकता, वर्ष 1986 में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम पारित होने के पश्चात उसी वर्ष तात्कालिक पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एक अभियान के माध्यम से प्रारंभ की गई थी। इस अभियान में गैर-सरकारी संगठनों, विद्यालयों, अन्वेषण संस्थाओं एवं सरकारी विभागों आदि को वित्तीय सहायता प्रदान की गई थी, जिससे कि वह पर्यावरण के प्रति जागरूकता में अपना योगदान दे सके। भारत में पर्यावरण जागरूकता फ़ैलाने का कार्य राजेंद्र सिंह, एम.सी. मेहता एवं मारिमुथू योगनाथन, एम.एस.स्वामीनाथन जैसे कई पर्यावरण प्रेमियों ने किया है।

जाने माने वास्तुकार रिचर्ड रोज़र्स के अनुसार "यदि हम पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार करना चाहते हैं तो इसका एकमात्र तरीका यह है कि हम इसमें सभी को शामिल करें"।

जबकि हम किसी कार्यालय विशेष में सप्ताह के लगभग 43 घंटे व्यतीय कर देते हैं तो यह हमारी ज़िम्मेदारी बन जाती है कि जिस वातावरण में हम रह रहे हैं उसकी संरक्षा में अपना यथोसाध्य योगदान दें जिससे कि जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) में भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित लक्ष्यों (NDC) को पूरा करने में अल्प ही सही किन्तु सुदृढ़ योगदान दे सकें।

ऐसे में कार्यालय में जागरूकता फ़ैलाने का कार्य कई भिन्न-भिन्न स्त्रोतों एवं उपायों के माध्यम से किया जा सकता है जैसे –

1. विद्युत् उपभोग का नियोजन : भारत में प्रति व्यक्ति विद्युत् खपत वर्ष 2013-14 में 957 किलोवाट से बढ़कर 45.8% वृद्धि के साथ वर्ष 2023-24 में 1,395 किलोवाट हो गई है। ध्यान देने योग्य बात है कि कोयला आधारित विद्युत् उत्पादन का हिस्सा वित्त वर्ष 2019-20 के 71% से बढकर वर्ष 2023-24 में 75% हो गया है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि बिजली के अति उपभोग को नियंत्रित किया जाए; जिसके लिए किसी कार्यालय में निम्न उपाय किए जा सकते हैं –

(क) कार्यालय में ऐसे विद्युत् उपकरणों की खरीद को प्रोत्साहन दिया जाए जो कम ऊर्जा उपभोग करते हों और बीईई (ब्यूरो ऑफ़ एनजी एफिसियंसी) के ऊर्जा मानकों के अनुसार हों।

(ख) भविष्य में आने वाले एसी के नए नियमों का अनुपालन करते हुए ऐसे एसी की खरीद की जाए, जिसके ताप की स्थाई सीमा 20 डिग्री से 28 डिग्री तक निर्धारित हो। ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिसियंसी के अनुसार एसी का ताप 1 डिग्री बढ़ाने पर 6% बिजली की बचत होती है और इस प्रकार 20 डिग्री के बजाय 24 डिग्री पर एसी निर्धारित करने से लगभग 24 प्रतिशत बिजली की बचत हो सकती है।

(ग) वर्ष 2007 में लागू एवं वर्ष 2017 में अद्यतित ऊर्जा संरक्षण भवन संहिता (ईसीबीसी) के अनुसार कार्यालयों का निर्माण करना जैसे : अपारदर्शी निर्माण सामग्री के ऊष्मीय गुणों का विस्तृत अध्ययन; इकोनोमाइज़र; परिवर्तनीय गति ड्राइव; पाइपिंग इन्सुलेशन; डक्ट सीलिंग, इन्सुलेशन और स्थान के माध्यम से कार्यक्षेत्र (बिल्डिंग) को हवादार और वातानुकूलित बनाना।

(घ) कोई भी विद्युत उपकरण यदि वह उपयोग में नहीं है, तो उसको बंद करने के निदेश के साथ कार्यालय में हर जगह एक नोटिस बोर्ड लगाना।

2. जल संरक्षण के प्रति जागरूकता : केंद्रीय जल आयोग के अनुमान के अनुसार वर्ष 2021 में प्रतिव्यक्ति पेयजल उपलब्धता 1,486 M3 रही जो कि वर्ष 2031 तक घटकर 1,367 M3 हो जाएगी। भारत पहले से ही जल उपलब्धता के मामले में संकटग्रस्त देशों की सूची में है जिनके पास जल उपलब्धता 1700 M3 से कम है क्योंकि जल जीवन का मूल आधार है इसलिए जल नियंत्रण एवं उपयोग में सहभागिता तथा विकेंद्रीकरण होना अत्यावश्यक है। ऐसे में हम प्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं 'जल पुरुष', डॉ. राजेन्द्र सिंह द्वारा सुझाए गए जल प्रबंधन हेतु पारंपरिक उपायों की ओर अधिक ध्यान दे सकते हैं। पारंपरिक जल प्रबंधन में सम्मिलित हैं:

(क) जल का सम्मान

(ख) पानी का संयमित उपयोग

(ग) जल का पुनर्प्रयोग एवं पुनर्चक्रण

(घ) जल की बहाली

इन उपायों/तरीकों का प्रयोग करके हम कार्यालय में भी जल संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, साथ ही कम प्रवाह वाले नलों का उपयोग, पानी का उपयोग न होने पर टैप बंद करने संबंधी निदेश, कम पानी वाले पौधों का उपयोग, नलों में IOT, सेंसर और AI जैसी तकनीकों का प्रयोग करके उन्हें स्वतः प्रयोज्य बनाना, जल बचाव हेतु निदेशों वाले नोटिस बोर्ड लगाकर भी कार्यालय में जल बचाव किया जा सकता है। दिल्ली जैसे महानगरों में पानी की समस्या एक सामान्य बात है—

गन्दा पानी आना, कम पानी आना, सीमित मात्रा में आना या फिर आना ही नहीं। 'ऐसे शहरों' के लिए जमील अजीमाबादी की पंक्ति 'उपयुक्त' बैठती हैं—

'जंगल जंगल आग लगी है, दरिया दरिया पानी है,
नगरी नगरी थाह नहीं है, लोग बहुत घबराए हैं"

3. ई-वेस्ट और कचरा प्रबंधन : दिल्ली में प्रतिदिन 11,300 टन कचरा उत्पन्न होता है, जबकि निस्तारण प्रतिदिन केवल 8010 टन का ही हो पाता है। 2028 तक दिल्ली में प्रतिदिन 13,229 टन कचरा उत्पन्न होने का अनुमान है; जाहिर सी बात है कि दिल्ली में जगह-जगह कूड़े के पहाड़ बनने का एक कारण यह भी है। वेस्ट टू

एनर्जी प्लांट अधिकाधिक संख्या में बनाने और स्थापित प्लांटों की क्षमता बढ़ाने से ही कचरा प्रबंधन में सफलता पाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त हम अपने कार्यस्थलों में कचरा प्रबंधन नीतियां अपनाकर इसके उपयोग में कमी ला सकते हैं—

(क) ई-वेस्ट से बचने के लिए स्थाई खरीद को प्रोत्साहन दिया जाए

(ख) किसी भी प्रकार के अपशिष्ट के लिए पुनर्चक्रण और पुनर्प्रयोज्य पद्यतियों का प्रयोग किया जाए

(ग) पुनर्चक्रण योग्य कचरे हेतु पृथक कूड़ेदान का प्रयोग किया जाए

(घ) नजदीकी निस्तारण केंद्र से कचरा प्रबंधन हेतु अनुबंध किया जाए

(ङ) नगर निगम के कचरा प्रबंधन के नियमों का पालन किया जाए

(च) अनावश्यक इलेक्ट्रॉनिक एवं अन्य खरीद से बचा जाए

(छ) कार्यालय के कार्मिकों को चाय/पानी एवं अन्य खाद्य प्रयोजनों हेतु स्थाई समाधान को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे कि प्लास्टिक या अन्य कागज़ की वस्तुओं का प्रयोग कम हो।

4. कागज के सीमित प्रयोग को प्रोत्साहन : सरकारी संगठनों में कागजों का अत्यधिक प्रयोग एक सामान्य परिदृश्य है। हालाँकि इस संबंध में सरकारों द्वारा ई-कार्यालय को अधिकाधिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है किन्तु अभी भी कई स्थानों पर कागज़ी मानसिकता से बाहर निकलना मुश्किल नजर आ रहा है। तथापि इस संबंध में कुछ दिशानिर्देश अवश्य जारी किए जा सकते हैं यथा—

(क) प्रिंटिंग की सीमाएं निर्धारित करना

(ख) स्थाई स्टोरेज जैसे वनड्राइव, डी ड्राइव आदि को बढ़ावा देना

(ग) इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षरों का प्रयोग अधिकतम करना

(घ) दो तरफ़ा प्रिंट को बढ़ावा देना

(ङ) अनावश्यक छपाई से बचना

इसके अतिरिक्त कार्यालयों के ऐसे बहुतायत क्षेत्र होते हैं, जिनके आधार पर पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहन दिया जा सकता है; जैसे-कारपूलिंग को बढ़ावा देना, कार्यालय कार्मिकों को जागरूक करने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करना, सेमिनार आयोजित करना और पर्यावरण से जुड़े अंतर्राष्ट्रीय दिवसों का कार्यालयों में आयोजन करना जैसे पर्यावरण दिवस, पृथ्वी दिवस एवं जल दिवस इत्यादि तथा सार्वजानिक वाहनों का अधिकाधिक प्रयोग करना।

भारत सरकार के मिशन 'LiFE' जिसका अर्थ है 'Lifestyle For Environment' अर्थात

‘पर्यावरण के लिए जीवनशैली’ को गंभीरता से लेते हुए हमें पर्यावरण को अपने दिन-प्रतिदिन के कामों में लाना होगा, जिससे हम अपने भविष्य को बेहतर विश्व एवं अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक मार्गदर्शन दे सकें।

“अंतिम समय जब कोई नहीं जाएगा साथ
एक वृक्ष जाएगा
अपनी गौरैयों-गिलहरियों से बिछुड़कर
साथ जाएगा एक वृक्ष
अग्नि में प्रवेश करेगा, वही मुझसे पहले”।

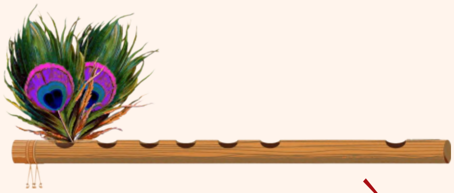

राजा ओमर
लेखापरीक्षक

शरबत

गर्मी काफी ज्यादा है,
चलो आज शरबत बनाते हैं
मैं पानी बनता हूँ
तुम्हें खुद में चीनी सा घुलाते हैं
चलो आज शरबत बनाते हैं

माना है बहुत भेदभाव आपस में
और मन में है बहुत खटास
नहीं लाया हूँ मैं आज नींबू
तुम्हारी और अपनी खटास से,
नींबू सा स्वाद लाते है आज शरबत बनाते हैं

तुम घोल देना अपनी मिठास मुझमें,
मैं पानी से शरबत हो जाऊंगा
मेरी हर बूंद में तुम होंगे
ना मैं ,मैं हूँगा,
ना तुम ,तुम होंगे
चलो अब पीके
सपनो की दुनिया में खो जाते हैं, अपनी थकान मिटाते हैं
गर्मी काफी ज्यादा है,
चलो आज शरबत बनाते हैं।

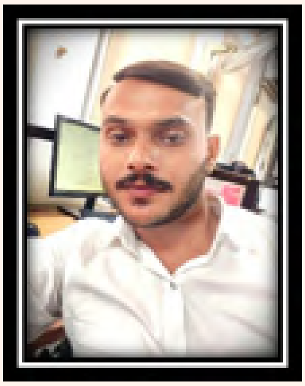

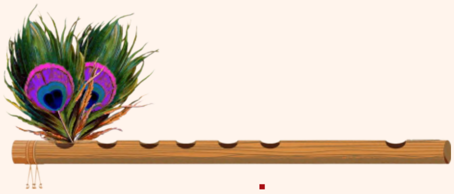

दुष्यंत कुमार
लेखापरीक्षक

माँ-पापा चले गए और मैं सब कुछ बन गया

26 जून-2016 का वो दिन जब मेरी जिन्दगी दो हिस्सों में टूट गई। पहला हिस्सा- जब मैं सिर्फ एक बेटा था और दूसरा जब मैं अकेला सब कुछ बन गया।

पहले पापा चले गए; अचानक, बिना कुछ कहे और फिर कुछ समय बाद मम्मी भी चली गईं, इतनी जल्दी कि सांसे जवाब ही दे गईं।

लोग आए और बोले, 'अब तुम ही हो सब..'। पर किसी ने नहीं पूछा कि "तुम कैसे हो?"

घर, रिश्तेदार, काम, जिम्मेदारियां सब एक ही पल में मेरे ऊपर गिर गईं। और मैं... मैं तो बस एक बेटा था, जिसे माँ की ममता और पिता की छाया की ज़रूरत थी।

मैंने किसी से कुछ नहीं कहा। न दर्द बताया, न आँसू दिखाए। बस अपने आप से वादा किया। मैं अब कमज़ोर नहीं पड़ूंगा, क्योंकि अब मेरे पीछे कोई नहीं है।

अब मैं सबके लिए हँसता हूँ; पर अन्दर से रोज़ एक चीख सुनाई देती है। अब मैं सबको संभालता हूँ पर खुद को कौन संभाले, ये नहीं जानता। मेरा भी मन है कि एक बार मम्मी से लिपट कर रो लेने का, मेरा भी मन है पापा से पूछने का कि वह क्यों चले गए ऐसे? पर किसी ने यह सवाल नहीं सुना। सबने मेरी मज़बूती देखी, मेरी टूटी हुई आत्मा नहीं। अब मैं सिर्फ एक बेटा नहीं हूँ, मैं बाप हूँ; माँ हूँ; बड़ा भाई हूँ; जवाब हूँ; सहारा हूँ। एक इन्सान हूँ जो अन्दर से हर रोज़ थोड़ा-थोड़ा मरता है, पर सुबह फिर खड़ा होता है। क्यों? क्योंकि माँ-बाप अब नहीं हैं। तो अब मुझे ही सब कुछ बनना है।

माँ-पापा की तस्वीरें अब दीवार पर हैं, पर उनके बिना जो खालीपन है, वह हर साँस में है।

'काश वक्त को थोड़ा रोक पाता, एक बार फिर आपको पास बुला पाता,
"माँ-पापा" कहकर सिर आपकी गोद में रखता, और बिना कुछ कहे, सब कुछ कह जाता'

यह मेरी कहानी है। दर्द की नहीं----ज़िम्मेदारी की।

नवीन
लेखापरीक्षक

राम नाम अति भाए

मुझको राम नाम अति भाए
'रा' निकले जब भी किसी मुख से
'म' मेरे मुख पर आ जाए
मुझको राम नाम अति भाए

ना मैं शबरी, ना केवट हूँ
इनकी तरह बस राम रटत हूँ
मुझको भी अपना लो राघव
कब से तुम्हरे पाँव पड़त हूँ
कैसे रीझोगे तुम मुझसे
कोई मुझे ये राज़ बताए

मुझको राम नाम अति भाए
मुझको राम नाम अति भाए

और कहीं भी चैन ना पाऊँ
मैं तुमको आवाज़ लगाऊँ
राम नाम इक गोद है जिसमें
सिर रखकर के मैं सो जाऊं

कोई अगर ले नाम तुम्हारा
मेरा वो प्रियतम हो जाए
मुझको राम नाम अति भाए
मुझको राम नाम अति भाए

मुझको मेरे राम सुधारो
अवगुण मेरे आप बिसारो
हूँ नालायक पुत्र तुम्हारा
चाहे डाँटो या पुचकारो
कैसे भी इस भीड़ में अब तो
एक 'नवीन' तुम्हें दिख जाए

मुझको राम नाम अति भाए
मुझको राम नाम अति भाए

"धनी बनूँ तो शिव जितना हो
राम नाम धन मेरे पास।
निर्धन बनूँ तो राम ही माँगूँ
माँगें जैसे तुलसीदास।।"

संजय यादव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नुक्कड़ नाटकः ग्रामीण किसान की व्यथा-संघर्ष से सम्मान तक

पात्रः

- नन्दलाल - गरीब किसान, जुझारू और ईमानदार
- सुनीता - नन्दलाल की पत्नी, सहनशील और समझदार
- ठेकेदार(मिडलमैन) - ज़मींदार का कठोर एजेंट
- सरपंच - गाँव का भ्रष्ट नेता
- सरकारी अधिकारी - भ्रष्ट कर्मचारी
- परमेश - सामाजिक कार्यकर्ता, आदर्शवादी
- संतोष - पढ़ा-लिखा युवा, नन्दलाल का बेटा
- गाँव के लोग - सहानुभूति और बदलाव के लिए जागरूक

नाटक की शुरुआत...............

(संध्या का समय, खेत के किनारे नन्दलाल और सुनीता बात कर रहे हैं। उनके चेहरे पर चिंता साफ झलक रही थी)

सुनीताः (अपने पति से, धीरे से), "एजी, अब तो कर्ज़ का बोझ इतना बढ़ गया है कि नींद भी नहीं आती। संतोष अब बड़ा हो गया है, इसकी पढ़ाई का खर्चा, बीमार बच्चों की दवाइयां...सब कैसे निकालेंगे?

नन्दलालः (गहरी सांस लेकर), "सुनीता, मिट्टी से जुड़ा इंसान हूँ मैं, हार नहीं मानूंगा। ये ज़मीन मालिक और ठेकेदार हमें कब तक परेशान करेंगें? हमारे हक की लड़ाई में एक-एक दिन संघर्ष है।

(ठेकेदार आता है, घमंडी अंदाज में)

ठेकेदारः (हँसते हुए), "नन्दलाल , समझ लो, तुम जैसे गरीब किसानों से पैसा वसूलना हमारा काम है। फसल

खराब हो या अच्छी, कर्ज़ तो चुकाना ही पड़ेगा।

नन्दलालः (गुस्से से), "तुम्हारा यह शोषण बंद होना चाहिए। सरकार की योजनाओं का क्या हुआ? हमारी मेहनत का पैसा तुम चुरा रहे हो।

(सरपंच आता है, अपने फोन में व्यस्त)

सरपंचः (थोड़ा तिरछा मुस्कुराते हुए), "राजनीति और पैसा ही इस दुनिया को चलाते हैं। जो हमें फायदा पहुंचाता है, वही सही है।

(सरकारी अधिकारी कुछ फाइलें लेकर आता है)

सरकारी अधिकारीः "सरकार की तरफ से मदद की बात तो होती है, लेकिन बहुत से कागज़ी झंझट हैं। जो किसानों तक पहुंच पाता है, वह बहुत कम है।

(संतोष और परमेश आते हैं, दोनों दृढ़ और आशावादी)

संतोषः (जोश से), "पिताजी, अब समय आ गया है बदलाव का। पढ़ाई और जागरूकता से ही हम इस जाल को तोड़ सकते हैं। हम लड़ेंगे, सिर्फ शिकायत नहीं करेंगे।

परमेश : (भीड़ की ओर) , "हम सब मिलकर भ्रष्टाचार और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएंगे। जब तक हम एक नहीं होंगे, सिस्टम नहीं बदलेगा।

(भीड़ जमा होती है, संघर्ष और उम्मीद का माहौल बनता है)

नन्दलालः (भीड़ से), "यह हमारी ज़मीन है, हमारा खून-पसीना है। किसान को वह सम्मान चाहिए, जो उसका हक है।

सुनीताः(भीड़ से), "हमारी बेटियां पढ़ें, बच्चे स्वस्थ रहें, ये हमारा सपना है।

ठेकेदार थोड़ा डरा हुआः (धीमे से), "शायद अब हमें भी बदलना होगा।

(भीड़ एकजुट होकर नारा लगाती है):

''गरीब किसान का सम्मान,

हर गाँव में हो विकास महान!''

सूत्रधार(अंतिम संवाद):

"किसान की पीड़ा सिर्फ ज़मीन की समस्या नहीं, यह समाज और शासन का दर्पण है।

बदलाव तभी आएगा, जब हम अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाएंगे,

और अपने हक़ के लिए लड़ेंगे। **आओ, हम सब मिलकर किसान को सम्मान दिलाएं।**

प्रभाकर प्रसाद
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पवित्र बंधन की अधूरी दास्तान

शादी था जीवन का पवित्र बंधन, अब बन गया है क्राइम पेट्रोल का मंचन
वचन देते थे सात फेरों के सात वचन निभाने के,
अब ढूंढते हैं नए नए तरीके उन्हीं अपनों को जीवन से हटाने के
शादी का मंडप था, शंखनाद था, माँ ने आशीर्वाद दिया घर आबाद था
पर किसे पता उनके मन में क्या था, जब हनीमून का टिकट और कोई तीसरा उनके साथ था
इंदौर, मेरठ या जयपुर की कहानियां हैं, हर शहर में रिश्तों के खून की निशानियां हैं
अब कैमरों पर माँ रोती है, आंखों में सूना सागर है
जो बेटा हर छोटी बात पर माँ के आँचल में छिपता था,
आज किसी के फरेब के चलते छोड़ गया संसार है
काश कि वो कुछ सच बोलती, शायद वो पहचान लेता,
क्या था उनके मन में, शायद वो कुछ जान लेता
पर ये कैसा रिश्ता था, जिसने इंसान का दम घोंट दिया
सात जन्मों के रिश्ते का भरोसा, पूरे समाज से तोड़ दिया
अब हर कोई हर रिश्ते में एक दूसरे को संदेह से देखेगा
रिश्तों में खत्म हुई ईमानदारी और भरोसे को मन हमेशा कुरेदेगा

अमित कुमार

लेखापरीक्षक

भटका हुआ मुसाफिर

'अजी सुनते हो! देखो आपसे कोई मिलने आया है?' अपनी पत्नी रेवती की आवाज सुनकर, गोपाल ,जोकि छत पर कुछ काम कर रहा था छत से जल्दी नीचे आया। जल्दी से हाथ साफ किए और मुँह धोया, फिर वह कमरे में गया जहाँ कोई उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। गोपाल ने हाथ जोड़कर अतिथि का अभिवादन किया और कहा मुझे माफ़ करना आप कौन हैं, मैंने आपको नहीं पहचाना, कृपया अपना परिचय दें।

इस पर अतिथि ने कहा 'मेरा नाम सूरज है, मैं हरिपुर गांव से आया हूँ और मैं अपने बड़े भैया माधव की शादी का निमंत्रण आपको देने के लिए आया हूँ।'

यूँ तो गोपाल का बचपन भी हरिपुर में ही गुज़रा था, लेकिन इस बात को काफ़ी वर्ष हो गए थे अब उसके दो बच्चे और एक सुन्दर पत्नी थी। वह शहर में अपनी जीविका अर्जित करने में इतना व्यस्त हो गया था कि जैसे वह सब भूल गया हो। लेकिन माधव का नाम सुनकर उसे जैसे सबकुछ याद सा आ गया हो, माधव उसके बचपन का मित्र था; वे दोनों साथ में स्कूल जाते थे, उन्होंने साथ में काफ़ी समय बिताया था।

गोपालः 'अरे वाह! ये तो बहुत अच्छी बात है'।

सूरज ने आग्रह किया कि कृपया शादी में ज़रूर आइएगा अगर परिवार के सभी लोग आएंगे तो बहुत अच्छा रहेगा। कुछ ज़रूरी कार्यों की वजह से माधव भैया नहीं आ पाए, लेकिन आप ज़रूर आइएगा। कुछ देर बाद सूरज चला गया क्योकि उसे शादी से सम्बंधित और भी काम थे।

गोपाल शहर में कोई बहुत बड़ा काम नहीं करता था। बहुत प्रयासों के बाद भी उसकी कोई नौकरी नहीं लग पाई थी क्योंकि वह पढ़ाई में कोई ज्यादा अच्छा नहीं था। इसी वजह से वह पिताजी के पास शहर आ गया था, जो एक सरकारी दफ़्तर में चपरासी थे, गोपाल के पिताजी के देहांत के बाद, गोपाल अब उसी कार्यालय में चपरासी है।

बचपन में उसके मित्र माधव ने उसकी हर तरह से सहायता की, चूँकि माधव की तरह गोपाल पढ़ाई में उतना अच्छा नहीं था इसलिए वह पढ़ाई से बचने के बहाने ढूंढता था। इसके अलावा दोनों बहुत ही मेहनती थे। वे खेत

में मज़दूरी करते थे, घर पर भी पूरा काम करते थे, लेकिन गोपाल को पढ़ना अच्छा नहीं लगता था।

गोपाल ने सोचा था कि वह बस से हरिपुर जायेगा। जब वह बस अड्डे पहुंचा तो उसे पता चला कि बस चालकों की हड़ताल की वजह से आज बस नहीं चल रही हैं। गोपाल का शादी में जाना ज़रूरी था वह सोचने लगा कि अब वह शादी में कैसे जाएगा? गोपाल ने अपने मित्र माधव से फोन पर बात की:

गोपाल : हैलो मित्र! मैं गोपाल बोल रहा हूँ।

माधव : हाँ दोस्त कैसे हो, कब आ रहे हो?

गोपाल : दोस्त शायद मैं शादी में न आ पाऊं, क्योंकि आज बस की हड़ताल है।

माधव : बस की हड़ताल है तो ट्रेन से आ जाओ।

गोपाल : भाई मैंने केवल ट्रेन के बारे में सुना ही है, कभी अकेले यात्रा नहीं की है और मैंने सुना है ट्रेन का किराया भी ज़्यादा लगता है।

माधव : थोड़ी देर रुको गोपाल, मैं वापिस फोन करता हूँ।

थोड़ी देर बाद माधव ने फोन किया तथा गोपाल को बताया कि उसने ट्रेन में उसका टिकट बुक कर दिया है, ट्रेन 4 बजे की है। वह ट्रेन का विवरण भेज रहा है।

30 वर्ष का होने के बावजूद गोपाल ने अपने जीवन में ट्रेन से एक बार ही यात्रा की थी वो भी बचपन में, अपने पिता जी के साथ लेकिन उसने ट्रेन के बारे में काफ़ी कुछ सुना था। गोपाल ने अपनी पत्नी को बताया कि वह ट्रेन से हरिपुर जा रहा है। इस पर उसकी पत्नी ने उससे कहा कि आप कभी भी ट्रेन से कहीं नहीं गए हो अपना ध्यान रखना, कवितायें मत गाने लगना और देखना कहीं भटक न जाना।

स्टेशन पर पहुँचकर उसने कई लोगो से पूछताछ की, लेकिन सभी लोग बहुत ज़्यादा व्यस्त थे। किसी के पास भी इतना समय नहीं था कि वह गोपाल की मदद करे। आखिर किसी तरह टीटी से पूछकर वह हरिपुर जाने वाली ट्रेन के प्लेटफार्म पर पहुंचा।

ट्रेन में चढ़कर गोपाल ने अपनी सीट ढूंढने का प्रयास किया।

ट्रेन के तृतीय श्रेणी के एसी कोच में गोपाल चौंड़ी आँखों से एक छोटा-सा कपड़ा बैग पकड़े हुए डिब्बे में प्रवेश करता है। वह इधर-उधर देखता है, अनिश्चित है कि कहाँ बैठना है।

गोपाल (विनम्रता से): नमस्ते, क्या यह सीट नंबर 34 है?

श्री मेहता [सहयात्री: एक धनी व्यवसायी, जिन्हें अपनी सफलता पर बहुत गर्व है](अपने फोन से ऊपर देखे बिना):

हाँ। हाँ। वहाँ है जल्दी करो,आप गलियारे को अवरुद्ध कर रहे हैं।

गोपाल (घबराहट से मुस्कुराते हुए): क्षमा करें। आज पहली बार ट्रेन में यात्रा कर रहा हूँ, यह सब बहुत नया है। ऐसा लगता है जैसे मैं ज़मीन पर उड़ रहा हूँ!

नेहा [सहयात्रीः कॉर्पोरेट नौकरी में काम करने वाली एक युवा, शहरी महिला](हल्के से हँसते हुए):

यह आपकी पहली ट्रेन सवारी है? यह बहुत रोमाँचक है। मैं तो यह भी नहीं गिन सकती कि मैंने कितनी बार ट्रेन से यात्रा की है।

रोहन [सहयात्रीः एक बड़े शहर के कॉलेज का छात्र](मुस्कुराते हुए): भाई, लगता है आप तो दुनिया से गायब हैं। आजकल हवाई जहाज का समय चल रहा है और उसकी तुलना में ट्रेन उबाऊ है। क्या आपने कभी किसी विमान से यात्रा की है?

गोपालः नहीं,अभी नहीं, यह ट्रेन ही मेरे लिए जादू की तरह है। इतने सारे लोग, सभी अलग-अलग जगहों पर जा रहे हैं। मैंने स्टेशन पर कई लोगो से सही प्लेटफार्म पूछा लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे किसी के पास समय ही नहीं हो।

श्री मेहता (मुस्कुराते हुए): भाई आजकल सभी बहुत व्यस्त हैं, किसी के पास समय नहीं है। खैर, आप जल्द ही सीख जाएंगे कि यहां लोग केवल अपनी परवाह करते हैं। किसी से भी सहानुभूति की उम्मीद न करें।

गोपाल (हैरान): लेकिन क्या यह सहानुभूति वह नहीं है,जो हमें मानवीय बनाती है? जिससे पता चलता है कि हम एक दूसरे के बारे में सोच रहे हैं। अगर कोई अपना एक मिनट ही निकालकर मुझे मेरी ट्रेन का प्लेटफार्म बता देता तो शायद मैं ट्रेन में बहुत पहले आ गया होता।

नेहाः यह इतना सरल नहीं है, गोपाल। शहरों में हर कोई अपनी ही दौड़ में लगा हुआ है। किसी के पास रुकने और मदद करने के लिए एक मिनट का भी समय नहीं है।

गोपालः सब लोग किसके लिए दौड़ रहे हैं?

रोहनः सफलता के लिए, पैसे के लिए, बड़ा पद पाने के लिए।

गोपालः लेकिन उन चीजों के बारे में क्या जो इन्सान को इन्सान बनाती हैं जैसे सभी का आदर करना, सभी के लिए हृदय में करुणा का भाव होना।

श्री मेहता (हँसते हुए): ये सब चीजें भाषणों के लिए अच्छी हैं, वास्तविक जीवन के लिए नहीं। सम्मान तभी आता है जब आपके पास शक्ति या धन हो। मैं मुंबई में एक बीएमडब्ल्यू चलाता हूँ और मेरे पास तीन घर हैं (थोड़ा रूककर) तभी लोग मेरा सम्मान करते हैं।

गोपाल (थोड़ा धीरे से): लेकिन क्या हमें किसी का सम्मान सिर्फ इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि वे इन्सान हैं? और जब हम दूसरों का सम्मान करते हैं, वे हमें आशीर्वाद देते हैं और हमारे मंगल की कामना करते हैं।

नेहाः आशीर्वाद से बिलों का भुगतान नहीं होता है, गोपाल। अगर आप इस तरह सोचोगे तो लोग आपको कुचल देंगे और आपको कोई महत्त्व नहीं देंगे।

(अचानक गड़गड़ाहट की आवाज होती है- कोने में एक बुजुर्ग महिला अपनी पानी की बोतल गिरा देती है और नीचे झुकने के लिए संघर्ष करती है। गोपाल तुरंत उठता है और उनकी मदद करता है।)

बुजुर्ग महिला (धीरे से) :धन्यवाद, बेटा। बहुत से लोग इन बातों पर अब ध्यान ही नहीं देते।

श्री मेहता (व्यंग्यपूर्ण) : क्या बात है आप तो हीरो हैं, याद रखिये यदि आप अजनबियों की मदद करते रहते हैं, तो वे आपसे पैसे माँगना शुरू कर देंगे।

गोपाल (नीचे देखते हुए): भले ही वे ऐसा करते हैं, लेकिन यह मानने से तो बेहतर है कि उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है।

नेहा (अपने स्मार्टवॉच की जाँच करते हुए) : ईमानदारी से कहूँ तो ज़्यादातर लोग अपनी स्थिति के लिए खुद ज़िम्मेदार होते हैं। मुझे 'चलो गरीबों पर दया करो' वाला नाटक पसंद नहीं है।

रोहनः सही कहा आपने। सभी को समान 24 घंटे मिलते हैं। अगर मैं कुछ कर सकता हूँ, तो दूसरे भी कर सकते हैं।

गोपालः लेकिन सब की शुरुआत एक ही परिस्थिति से नहीं होती है। कुछ लोग ऐसी जगह भी पैदा होते हैं, जहाँ उन्हें छत भी नसीब नहीं होती है।

श्री मेहताः फिर तो उन्हें कड़ी मेहनत करनी चाहिए। मैंने भी बिना किसी की मदद के अपना साम्राज्य बनाया है।

नेहाः दुनिया अब केवल कठोर लोगों को ही पुरस्कृत करती है, गोपाल। करुणा एक कमज़ोरी है।

गोपाल (चूँकि उसे शौचालय जाना है इसलिए जल्दी में बात खत्म करते हुए): हाँ, आप सही कह रही हैं।

गोपाल एक यात्री से शौचालय के बारे में पूछता है, सहयात्री कुछ नहीं बताता बस शौचालय की ओर संकेत कर देता है। गोपाल जब शौचालय से वापिस आया तो उसने देखा सब अपने आप में व्यस्त हैं, उसने अपनी सीट पर चादर बिछाई और लेट गया। वह बहुत थका हुआ था जिस कारण थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई।

थोड़ी देर बाद गोपाल की आँखे खुलती है, वह अपने सहयात्रियों से हरिपुर कैसे जाएं इस बारे में पूछताछ करने का प्रयास करता है, लेकिन कोई भी उसे सही जानकारी नहीं देता। गोपाल को भूख लगती है तो खाना खाने के लिए ठीक से बैठने की कोशिश करता है, लेकिन ट्रेन के अचानक से रुकने के कारण उसका थोड़ा सा खाना नीचे गिर जाता है। इस पर मेहता जी गोपाल को जाहिल और गँवार कहते हैं, आस-पास के यात्री गोपाल को तिरस्कार भरी दृष्टि से देखते हैं। गोपाल को बुरा लगता है, वह सब से माफ़ी माँगता है और गिरे हुए खाने को

साफ करता है। उसके बाद गोपाल सो नहीं पाता बस वह समय देखता रहता है कि कब वह हरिपुर पहुँचेगा।

कुछ समय बाद ट्रेन धीमी हो जाती है। गोपाल का स्टेशन आने वाला है, वह चुपचाप डिब्बे के चारों ओर देखते हुए अपना सामान उठाता है। बुजुर्ग महिला सौम्य मुस्कान के साथ सिर हिलाकर उसे अलविदा कहती है। कोई और गोपाल की ओर ध्यान नहीं देता।

गोपाल (*नरम, ज़्यादातर खुद के लिए*): विकास की इस दौड़ में हम गति में तो बहुत आगे आ गए हैं, लेकिन सहानुभूति के मामले में और भी पीछे चले गए हैं।

गोपाल कुछ पंक्तियाँ गुनगुनाने लगा :

दिन भर करता भागदौड़, न करता कोई आराम है,
जीवन सारा यूँ ही बिताया, पल भर न विश्राम है,
नहीं पता कौन है साथ में, फिर भी कत्लेआम है,
पता नहीं कब जागेगा, सोया जग सरेआम है।
गाड़ी बंगला नौकर चाकर, घर में सभी आराम हैं,
कोई न किसी का है कहीं पर,हालत जैसे शमशान है,
फिर भी अपना सीना तानकर, लड़ता नए संग्राम है,
दिन भर करता भागदौड़, न करता कोई आराम है।

गोपाल ट्रेन से नीचे कदम रखता है, ट्रेन के हटने के साथ स्थिर खड़ा रहता है। उसका चेहरा भ्रम, उदासी और गहरे विचार का मिश्रण है।

जैसे ही ट्रेन कुछ दूरी पर गायब हो गई, गोपाल अकेला खड़ा रहा—अवाक् और भारी-भरकम, अपनी यात्रा से नहीं, बल्कि उस दुनिया से जो उसने अभी-अभी देखी थी। यह यात्रा शुरू करने से पहले उसे ऐसा लग रहा था कि कहीं वह भटक न जाएं लेकिन अब यात्रा समाप्ति के उपरांत उसे ऐसा लग रहा है जैसे पूरा समाज ही भटक गया हो क्योंकि कोई भी किसी के बारे में न तो सोचता है, न ही मदद के लिए आगे आता है, बस सब अपनी ही भागदौड़ में लगे हैं। जीवन के सफ़र में जैसे सब भटक से गए हैं। हालांकि, गोपाल ने माधव को अपने स्टेशन पर आने की सूचना दे दी थी और वह आने भी वाला था, लेकिन फिर भी गोपाल के साथ इस यात्रा के दौरान जो हुआ, वह उसके बारे में सोचने से खुद को नहीं रोक पा रहा था।

प्रभाकर प्रसाद
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरी बेटी मेरा स्वाभिमान

तू आई तो नया सवेरा बन गई,
अंधेरे में रोशनी का बसेरा बन गई।
तेरी हँसी में था कुछ जादू ऐसा,
हर दर्द अब प्यारी सी कहानी बन गई।

छोटे-छोटे कदमों से घर को सजाया,
तेरे पहले शब्द ने दिल को गुदगुदाया।
तेरी मासूम आँखों में जो सपना बसा,
वो सपना अब मेरा भी सपना बन गया।

तू गिरे तो जैसे मेरी दुनिया हिले,
तू मुस्काए तो मेरा ये दिल खिल उठे।
तेरी छोटी-छोटी खुशियों में है मेरा जहां,
तुझसे एक पल की दूरी में लगे सूना आसमाँ।

सारी दुनिया की खुशियाँ तुम्हारे लिए,
एक दर्द का साया भी छुए नहीं।
मैं रहूँ, ना रहूँ कल इस दुनिया में,
तेरे सपनों में जियूँगा तुम्हारे लिए।

'सानू' तू मेरा अभिमान ही नहीं,
मेरा भरोसा है तू मेरा जहां भी है।
मेरी दुनिया तो तुझ ही से शुरू है अभी,
तेरे लिए मेरी दुआ, मेरी जान भी है।

मनोज मधुकर कस्तूर
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

असली दुश्मन कौन है.....

नमस्कार मित्रो! हम सभी जानते हैं कि किस कायराना तरीके से 22 अप्रैल 2025 को, जम्मू और कश्मीर के अनन्तनाग ज़िले में पहलगाम के पास बैसरन घाटी पर पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों ने हमला कर 26 निर्दोष भारतीय नागरिकों की, उनके धर्म के आधार पर पहचान कर, निर्मम हत्या कर दी थी। जिसके जवाब में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को नष्ट करने के लिए, भारतीय सशस्त्र सेना ने 6-7 मई की रात को पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (पीओके) की सीमाओ में स्थित आतंकवादी कैम्पों को 'ऑपरेशन सिन्दूर' के तहत धवस्त कर दिया। भारतीय सेनाओ ने ऑपरेशन सिन्दूर द्वारा सम्पूर्ण विश्व को यह सन्देश भी दिया कि अपने देश और उसके नागरिको की रक्षा हेतु हमारी सेनाएँ सदैव तत्पर हैं। पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद को भारत हमेशा से विश्व पटल पर उजागर करता आया है, इस बार भी हमने यही किया। तो इसमें मेरे द्वारा आप सबको बताने में नया क्या है। हर भारतीय जानता है कि हमारा पड़ोसी देश किस तरह से हमारी सम्प्रभुता पर चोट पहुँचाने के लिए समय-समय पर आक्रमण करता रहता है। मेरे इस लेख का उद्देश्य पाकिस्तान या उसके द्वारा समर्थित आतंकवाद को बताना नहीं बल्कि उन दुश्मनों के बारे में बताना है, जो सीमा पार नहीं अपितु हमारे देश में ही, हम सब के बीच रहते हुए हमारे शत्रु के समर्थन में कार्य करते रहते हैं। यानी मेरे देश, मेरी सेनाओं के समक्ष अप्रत्यक्ष रूप से खड़े दुश्मन, जो हमारे असली दुश्मन है, मैंने इस लेख 'असली दुश्मन कौन है.....' के माध्यम से आप सबका इस ओर ध्यान आकर्षित करने का एक प्रयास किया है।

ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान मैंने कई लोगों को यह कहते सुना कि हमारे पास यह बहुत अच्छा मौका था, पीओके को अपने देश में शामिल करने का, पाकिस्तान को एक सबक सिखाने का और न जाने क्या क्या? परन्तु भारत सरकार ने इन अफवाहों पर ध्यान न देकर, बहुत जल्द ही ऑपरेशन सिन्दूर को समाप्त कर दिया। परन्तु

इस दौरान बहुत कुछ ऐसा भी हुआ जो आप सब, वैसे तो समय-समय पर समाचार के माध्यम से सुनते रहते हैं, पर कभी उसकी गहराई को नहीं समझ पाते, जैसे मैं आज तक नहीं समझ पाया था। अक्सर हम देखते हैं कि कैसे कुछ लोग खुलेआम हमारे देश के प्रधानमंत्री, भारत सरकार के खिलाफ घृणा भरे बयान देते रहते हैं। सोशल मीडिया पर हमारे अपने कुछ लोग, हमारे लोगों को नुकसान पहुँचाने और अंजाम भुगतने की धमकी भरे पोस्ट्स डालते रहते हैं। उनको मुख्य धारा में जोड़ने के लिए सरकार हर स्तर पर प्रयास करती रही है, पर यह कार्य सिर्फ अकेले सरकार का नहीं बल्कि हम सबका है। इस सन्दर्भ में, मैं आप सबका ध्यान कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित तथ्यों पर लाना चाहता हूँ। जहाँ हमारी सुरक्षा एजेंसियों द्वारा हरियाणा की एक यूटूबर को पाकिस्तान एजेंसियों के संपर्क में रहते हुए देश विरोधी गतिविधियों में शामिल होने पर गिरफ्तार किया गया, वहीं दूसरी तरफ, गुजरात ए.टी.एस. द्वारा एक 18 वषीय युवक को हमारी सेना की वेबसाइट्स पर ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान साइबर अटैक्स करने पर इन्वेस्टीगेशन उपरांत गिरफ्तार किया गया। क्या यह सब महज एक इत्तेफाक है या एक सुनियोजित प्रयास। आज की जीवनशैली में आप और हम सब इतने व्यस्त हो गए हैं, की हमें पता ही नहीं होता कि, हमारे पड़ोस में क्या चल रहा है? सब जानते हैं कि किसी भी देश का गर्व उसके लोग होते हैं। हमने देखा कि ऑपरेशन सिन्दूर को लेकर किस तरह सर्वदलीय नेताओं ने विश्व भर में भ्रमण कर, हमारे देश के स्वयं हित वाले पहलू को सबके सामने रखा। हर समाज और राष्ट्र की तरह, हमारे भी अपने कुछ ज्वलंत मुद्दे हैं जिनका समाधान हमें मिलकर ढूँढना है। जिसके लिए हम सबका, अपने समय में से कुछ समय अपने देश और अपने लोगों के लिए निकालना आज की एक अपरिहार्य आवश्यकता है। हमारी सरकारें अपने-अपने स्तर से इस दिशा में निरंतर प्रयास कर रही हैं, ठीक वैसे ही हम सबको मिलकर भी अपना-अपना कर्त्तव्य निभाना है। जिसकी शुरुआत हमें सबसे पहले अपने आपसे करनी है। उपर्युक्त उदाहरण किसी व्यक्ति विशेष पर दोषारोपण करना या गलत कहना नहीं है, बल्कि उन लोगों के पीछे छिपे हमारे देश के असली दुश्मनों की तरफ है। जो आपके और हमारे जैसे लोगों को किस तरह बरगलाकर, अपने ही लोगों के खिलाफ कार्य करवाने के लिए तैयार कर रहे हैं। देश में हमारी सुरक्षा हेतु, देश के जवान हर स्तर पर अपना कर्त्तव्य ईमानदारी से निभा रहे हैं। पर शायद देश की सरहद पर ही नहीं, ये सुरक्षा अब हमें समाज के अन्दर भी करनी है। जिसके लिए आपको किसी के लिए नकारात्मक या हिंसात्मक रास्ता नहीं बल्कि अगला कदम उठाने से पहले संयम पूर्वक विचार करना है, या कहूँ तो सर्वप्रथम स्वयं को जागरुक करना है। अगर आपको आस-पास किसी भी तरह की कोई गलत या असामाजिक गतिविधि का पता चलता है तो उसके बारे में, शीघ्र ही निकटतम पुलिस स्टेशन पर सूचित करने की आदत अपनानी होगी। हमारे आस पास के युवक युवतियों को समय-समय पर मार्गदर्शन देने के लिए स्वयं से ही प्रयास शुरू करना

होगा। मैं जानता हूँ कि आप और हम, कोई नेता, पुलिस या समाज सुधारक नहीं हैं। पर हम सब एक भारतीय जरुर हैं, इसीलिए मैं आप सबसे यह प्रार्थना जरुर करूँगा कि आप, आज के चकाचौंध से भरे वर्तमान समय में, हमारे आपके युवावर्ग को उनके आसपास हो रहे, देशविरोधी वातावरण के बारे में अवश्य अवगत करायें और उचित मार्गदर्शन प्रदान करें, भले ही आपको सकारात्मक प्रतिक्रिया न मिले। हो सकता है कि उस वक्त आपकी बात उसे समझ में न आए पर जब कभी भी वो उन जैसी परिस्तिथियों से गुज़रेगा, सही और गलत में फर्क नहीं समझ पा रहा होगा, तो आपकी कही हुई वो बातें उसके मार्गदर्शन का कार्य अवश्य कर सकती हैं।

जैसे कोई भी शत्रु तब तक परास्त नहीं हो सकता, जब तक उसका सुरक्षा तंत्र मज़बूत है। ठीक उसी तरह, हमारे देश के लिए भी हम सभी उस अप्रत्यक्ष सुरक्षातंत्र का एक भाग हैं। हमारे लिए, अपने बीच ऐसे भटके हुए युवाओं को, पुनः सामाजिक धारा में जोड़ना उतना ही आवश्यक है, जितना देश की सीमा पर खड़े जवान की सुरक्षा। वैसे तो हमारा देश, विश्व में अपनी एक अलग महत्वपूर्ण पहचान रखता है। फिर चाहे वो रक्षातंत्र, सामाजिक तंत्र या अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सबके कल्याण हेतु, हमारे योगदान ही क्यों न हो? परन्तु हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारा कोई भी युवा, समाज की मुख्य धारा से अलग होते ही, हमारे शत्रुओ के लिए एक आसान और सुलभ साधन के रूप में उपलब्ध हो जाता है। जहाँ उसे किसी भी विचारधारा में जोड़ना बहुत आसान होता है, भले ही वो बाद में देशविरोधी क्यों न बन जाये? मेरा यहाँ तात्पर्य किसी भी व्यक्ति विशेष या समाज को सही या गलत साबित करना नहीं है, बल्कि आप सब का ध्यान हम सबके मध्य बढ़ रही ऐसी किसी भी संभावना की तरफ लाने का है। यहाँ पर मैं, एक बात और आप सबके मध्य ज़रुर रखना चाहूँगा कि उपर्युक्त उदाहरणों में शामिल व्यक्ति हमारा असली दुश्मन नहीं अपितु वो परिस्थितियाँ हैं जिनकी वजह से वह व्यक्ति बिना उसके परिणामों की सोचे ऐसे रास्तों पर चल पड़ता है, और पकड़े जाने पर बाद में पछताता है। पर तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। जिसके कारण न केवल उन्हें अपितु उनके पूरे परिवार को उसका परिणाम भुगतना पड़ता है। इस दशा में पहुँच कर ठोकर खाने के बाद, सही दिशा में चलने से बेहतर होगा, यदि हम ऐसे किसी भी युवा को उस दिशा में जाने से पहले ही रोक दें और उनके जीवन को सदमार्ग और देशहित में अपना योगदान करने हेतु प्रेरित करें। जिसके लिए सबसे पहले हमें स्वयं को बदलना होगा। वर्तमान में 146 करोड़ जनसंख्या वाले भारत देश में, हमारे सभी युवाओ को समाज की मुख्यधारा से जोड़कर, न हम सिर्फ अपने देश को और मजबूत बल्कि अपने भविष्य को और अधिक उज्ज्वल बना पायेंगे।

इसी आशा के साथ कि उपर्युक्त लेख के माध्यम से मैं, आप सबका ध्यान कुछ पल के लिए ही सही, पर इस संजीदा विषय की तरफ लाने में, असफल तो नहीं रहा होगा। इसी के साथ आप सभी को मेरा नमस्कार...।

राजेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब तू आया इस धरती पर

जब तू आया इस धरती पर,
हर खुशियाँ आईं हमारे घर।
तेरी मुस्कान ने यह सिखाया,
सच्चा सुख क्या है वो बतलाया।

नन्हे-नन्हे तेरे हाथों में,
बसी है दुनिया सारी।
तेरी भोली बातों में छुपी,
एक मीठी सी पुकार सारी।

तू मेरा चाँद, तू मेरा तारा,
तू मेरे जीवन का सबसे प्यारा गीत।
बिना तेरे अधूरे हैं हम,
तू ही मेरी ख़ुशी, तू ही मेरी रीत।

तेरे हर सपने में रंग भरूँ,
हर ग़म से तुझे मैं दूर करूँ।
हर चोट से पहले खुद लगूँ,
तेरे लिए मैं सब कुछ सह लूँ।

तू चले तो राहें फूल बनें,
जहाँ देखे वहाँ बहारें हों।
तेरे हौसलों को मिले पंख,
तेरी आँखों में सितारे हों।

तू बड़ा हो पर दिल से सरल,
तेरा मन रहे सदा निर्मल।
कभी झुके, कभी उठे तू,
हर हार से कुछ सीखे तू।

जीवन की हर एक चाल में,
मेरा आशीर्वाद तेरे साथ चले।
हर मोड़ पर तू मुस्कुराए,
तेरी झोली में हमेशा प्यार पले।

संजय यादव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

खिड़की की ओर

शहर की भीड़-भाड़, शोर-शराबे और लगातार भागती ज़िंदगी से काफी दूर एक छोटा सा गाँव था, उस गाँव के एक कोने में जो सबसे अलग था दादी का पुराना घर। खपरैल का वह घर, जिसमें लकड़ी की खिड़कियां थीं और दीवारों पर मिट्टी की पुताई देखकर यही लगता था, जैसे वक्त भी वहाँ ठहर गया हो।

अमित(दादी का पोता), जो अब एक कॉर्पोरेट ऑफिस में मैनेजर था, सालों बाद इस घर में लौटा था। कारण था दादी की तबीयत और माता-पिता का बार-बार फोन करना 'कम से कम एक बार देख तो आ। अब अकेले हम लोग नहीं संभाल पा रहे हैं।'

मुंबई की भागती ज़िंदगी से दस दिन की छुट्टी लेना आसान नहीं था, लेकिन कभी इस घर में बिताए गए बचपन की यादें उसे खींच लाईं।

घर में दाखिल होते ही वही पुरानी खुशबू, जो किताबों, धूल और इमली के अचार की मिली-जुली गंध थी, उसके ज़ेहन में पुराने चित्रों की तरह उभर आई। दादी वही थीं, बस अब थोड़ी झुकी हुई कमर और धीमी आवाज़ के साथ।

'आ गया मेरा राजा/सोना बेटा!' दादी की आवाज़ में अब भी वही अपनापन था।

'कैसी हो दादी?' अमित ने पास जाकर उनका हाथ थाम लिया।

'बुढ़ापा है बेटा, क्या ही कहूँ... पर तुझे देखकर जान में जान आई।'

शाम को चाय के साथ दादी ने पुरानी बातों का पिटारा खोल दिया पड़ोस की चाची, दादी की चुगली, गली के लड़कों की पतंगबाज़ी और अमित की स्कूल की शरारतें।

अमित खिड़की के पास बैठा था, जहाँ से बरामदे की हरियाली और अमरूद एवं केले का पेड़ जो कि अमित ने ही लगाए थे, साफ दिखता था। वही पेड़, जहाँ वो चढ़ा करता था और फिर दादी से डाँट खाता था।

'ये खिड़की अब भी वैसी ही है,' वह बुदबुदाया।

‘हाँ, और ये पेड़ भी... तेरे जैसे किसी का इंतज़ार करता है शायद,’ दादी मुस्कुरा कर बोलीं।

दादी ने खिड़की से बाहर झांका। शाम की हल्की धूप में पेड़ की छांव कुछ गहरी लग रही थी। ज़िंदगी में बहुत कुछ बदल गया था—दफ्तर की मीटिंग्स, टारगेट्स, प्रमोशन की दौड़, लेकिन कुछ भी इस खिड़की की सादगी और शांति के सामने ठहर नहीं पा रहा था।

अगले दिन दादी ने अलमारी में से एक पुराना एलबम अपने पुराने बक्से में से निकाला। जब दादी बक्से को खोल रहीं थी तो अमित को याद आया कि बचपन में जब दादी नमकीन, बिस्कुट उसे एवं उसके भाई बहनों को देने के लिए बुलाती थीं तो बक्से को थोड़ा ही खोलती थी एवं थोड़े खुले हुए बक्से से ही नमकीन, बिस्कुट निकाल कर सबको देतीं थीं। पूरा इसलिए नहीं खोलती थीं क्योंकि पूरा खोलने पर अमित घर में बड़ा होने के कारण पूरा नमकीन, बिस्कुट अकेले लेकर भाग जाता था। एलबम में पीले पड़े पन्नों में फंसी तस्वीरों में एक नन्हा अमित, उसके माँ-बाप, भाई-बहन, उसकी बुआ और दादी-सभी मुस्कुरा रहे थे।

‘याद है, ये तस्वीर कब की है?’ दादी ने पूछा।

‘नहीं,’ अमित मुस्कराया।

‘‘तेरे दसवें जन्मदिन की। तू कितना जिद्दी था उस दिन। केक में सिर्फ ‘साईकल’ चाहिए था।’’

अमित हँस पड़ा। लेकिन हँसी में हल्का दर्द भी था। शायद इसलिए कि अब जन्मदिन मनाने का वक्त ही नहीं मिलता और न ही साईकल जैसा कोई सपना बाकी रहा।

अमित की नज़रें खिड़की से फिर बाहर चली गईं। अब शाम हो चली थी और पेड़ पर परिंदे लौटने लगे थे।

‘दादी, क्या आपको कभी अकेलापन नहीं लगता?’

दादी, थोड़ी देर चुप रहीं। फिर धीरे से बोलीं, ‘‘लगता है, बेटा। लेकिन अकेलापन तब ज्यादा सताता है जब हमारे पास यादें न हों। मेरे पास तो यादों की पूरी दुनिया है—तेरी तोतली बोली, तेरी साईकल की पहली सवारी और ये खिड़की... जो अब भी हर सुबह मुझे नए दिन की उम्मीद देती है।’’

अमित ने पहली बार महसूस किया कि ये घर सिर्फ दीवारों और ईंटों से नहीं बना था, बल्कि उन रिश्तों, स्मृतियों और समय की परतों से बना था जिन्हें उसने वर्षों से अनदेखा किया था।

दादी के साथ गाँव में रहते हुए दस दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला।

अगले दिन जब अमित वापसी के लिए तैयार हो रहा था, दादी ने एक छोटा-सा लिफाफा दिया।

‘क्या है ये?’ उसने पूछा।

‘‘एक चिट्ठी है... जो तू तब लिखता था, जब तेरी माँ डाँटती थी और फिर मुझे दे देता था। संभाल कर रखी है मैंने।’’

अमित ने लिफाफा खोला। उसमें टेढ़ी-मेंढ़ी लिखावट में लिखा थाः

“दादी, मैं आपसे बहुत प्यार करता हूँ। जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, तो आपके लिए बहुत बड़ा घर बनाऊँगा। जिसमें बहुत सारी खिड़कियाँ होंगी, ताकि आप हर सुबह सूरज को देख सकें।’’

उसकी आँखें नम हो गईं। वह उस खिड़की की ओर देख रहा था, जो अब सिर्फ एक खुला रास्ता नहीं थी, बल्कि आत्मा का एक आईना बन चुकी थी। अमित ने बड़ा एवं सुंदर घर तो बनवा दिया था, परन्तु उस घर में वह मुंबई में नौकरी के कारण अपनी दादी के साथ प्रतिदिन नहीं रह सकता था, इसका उसे अफ़सोस था एवं दादी को पुराने घर से जुड़ाव होने के कारण वह पुराने घर में ही रहती थी।

‘‘दादी, मैं अगली बार ऑफिस से लंबी छुट्टी लेकर आऊंगा,’’ उसने वादा किया।

‘‘ठीक है बेटा, पर अगली बार तेरी खिड़की वाली चाय पियेंगे,’’ दादी ने हल्का सा ठहाका लगाया।

जब अमित बाहर निकला, तो उसने खिड़की की ओर एक बार और देखा। जैसे वह कहना चाहता हो—‘मैं वापस आऊंगा, यहीं, जहां से मेरी ज़िंदगी की असली शुरुआत हुई थी, जहाँ मेरा बचपन बीता इसके बाद अमित मुंबई वापस चला गया, जहाँ से वह प्रतिदिन दादी से विडियो कॉल पर बात करता था दादी खिड़की के पास बैठकर बात करती थी एवं अमित को खिड़की से ही उसके द्वारा लगाए गए अमरुद एवं केले के पेड़ को दिखाती थी, जिससे उसके बचपन की यादें ताज़ा हो जाती थी।

मनोज वत्स
लेखापरीक्षक

पहलगाम आतंकी हमला

जो सुहागन लाल रंग के जोड़े में बड़े शौक से इतराती थी
जीवन उसका बेरंग हुआ, पहलगाम के नाम से ही घबराती है
मेंहंदी वाले हाथों ने, पति की लाश उठाई है
बेबस होते बच्चों ने, पिता की जान गंवाई है
मृतकों के माता-पिता को रोते-बिलखते देखा है
पहलगाम की घाटी में अपनों को मरते देखा है

आतंकी का धर्म नहीं, यह पाठ पढ़ाया है किसने
जो कलमा न पढ़ पाया, बस जान गंवाई है उसने
धर्म पूछकर निहत्थों पर, है तुमने जो आघात किया
कायरता अपनी दिखलाई, मानवता को शर्मसार किया

है याद तुम्हें या भूल गए, सन् 65 और 71 को
हमेशा बुरे हैं कर्म तुम्हारे, मत कोसा करो मुकद्दर को
नापाक इरादे पाक के, हम ख़ाक बनाने आयेंगे
जिन्दगी भर ना भूलो, सबक ऐसा तुम्हें सिखायेंगे
वंशज हम महाराणा के, औकात तुम्हें दिखलायेंगे
कुछ और ज़रा तुम सब्र करो, हम धर्म बताने आयेंगे

15 दिन बाद ऑपरेशन सिन्दूर

धर्म पूछकर बहनों का सिन्दूर मिटाया था तुमने
उसी मिटे सिन्दूर को बारूद बनाया है हमने
दुनिया को नए भारत का यशगान सुनाया है हमने
दुश्मन के घर में घुसकर ही जश्न मनाया है हमने

सिन्धु जल समझौते पर विराम लगाया है हमने
बूँद-बूँद पानी को तरसो, ऐसा पाठ पढ़ाया है हमने
आतंकी अड्डों को तुम्हारे ख़ाक बनाया है हमने
तुम्हारी सेना के घमंड को मिट्टी में मिलाया है हमने
अँधेरी रात में भी तुम्हें दिन दिखलाया है हमने

चीनी हथियारों के दम पर युद्ध ना तुम जीत पाओगे
कश्मीर तो भूल जाओ, लाहौर करांची भी गँवाओगे
चुटकी भर सिन्दूर की कीमत ना भूल कभी तुम पाओगे
आतंकवाद के सांप को अगर ऐसे ही दूध पिलाओगे
तो वो दिन ज़्यादा दूर नहीं जब दुनिया के नक्शे से मिट जाओगे।

मनोज मधुकर कस्तूर
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

काश! मेरी गर्लफ्रेंड भी एक डबलएओ होती

बदलते समय के साथ सामाजिक रिश्तों के मायने अक्सर बदलते रहते हैं। इसी तरह एक रिश्ता ऐसा भी हो सकता है, जहाँ परिवारों की जद्दोजहद के साथ-साथ कार्यालय मे भी अक्सर इम्तिहानों से गुज़रते हुए, कुछ पल के लिए ही सही, पर सब कुछ भूला जा सके। उम्र के सबसे जोशीले दौर में, उन नए युवाओं-युवतियों का एक रिश्ता जहाँ ऑडिट डिपार्टमेंट में कार्य करते हुए युवा डबलऐओज में एक अभिलाषा कहीं किसी कोने में ऐसी भी हो सकती हैं कि 'काश! मेरी गर्लफ्रेंड भी एक डबलऐओ होती....', पर आप सबका ध्यान लाने का एक प्रयास, कुछ पंक्तियों के रुप में मैंने किया है–

काश! मेरी गर्लफ्रेंड भी एक डबलएओ होती....
जब से डिपार्टमेंट जॉइन किया हैं, ऑडिट ही ऑडिट चल रहे हैं,
एक तरफ स्वाभिमान और दूसरी तरफ अरमान आसमान छू रहे हैं,
फील्ड में कार्य की स्वतंत्रता से कॉन्फिडेंस दिन पर दिन बढ़ रहा है,
पर दोस्तों को उनकी गर्लफ्रेंड्स के साथ देख, दिल भी मचल रहा है,

कितना अच्छा होता कि अगर मेरी गर्लफ्रेंड भी डबलऐओ होती,
फिर हम दोनों में ऑडिट ओपिनिअंस को लेकर भी लड़ाइयां होती,
उसकी ख़ुशी के लिए, सही होकर भी मैं अक्सर उससे हार जाया करता,
सीनियर ऐओ द्वारा उसके एच.एम. ड्राप होने पर हिम्मत भी बंधाता,

बॉस से रिक्वेस्ट करके हम दोनों को एक एल.ए.पी. में पोस्ट करवाता,
फिर ऑफिशियली बिना रोक टोक उसके साथ हर ऑडिट टूर पर जाता,
सीनियर ऐओ कहीं नाराज़ न हो जाएं, ऐसी लगन से मैं हर ऑडिट करता,
उसको कहीं स्ट्रेस न हो, इसलिए उसके लिए भी और एच.एम. बनाता,

इस सिलसिले को यूंही बनाये रखने के लिए मैं कुछ भी कर गुज़रता,
परिवार वालों के साथ साथ ऑफिस की भी हर नाराज़गी दूर करता,
उसके साथ गुज़ारा हुआ हर खूबसूरत पल ऑडिटनुमा बन जाता,
साथ में ऑडिट दर ऑडिट वो वक्त ऐसे ही गुज़रता चला जाता,

और हम ऑफिस के सबसे बेस्ट डबलऐओ भी बन जाते,
हमारी होती हर जीत में उसका क्रेडिट हमेशा मुझसे ज़्यादा होता,

एक एल.ए.पी. में बने रहने के लिए, बॉस से भी हज़ार मिन्नते कर लेता,
काश! अगर ऐसा एक रिश्ता मुझे भी जीने को मिला होता,

कितने खुशनसीब होंगे वो सब जो ऐसे रिश्ते को जी पाते हैं,
जीवन का सफ़र, एक दूजे के साथ ऐसे शुरू कर जाते हैं,
काश! मेरी गर्लफ्रेंड भी मेरे ऑडिट जुनून को मेरी तरह समझती,
काश! मेरी गर्लफ्रेंड भी मेरे साथ एक डबलऐओ होती....।।

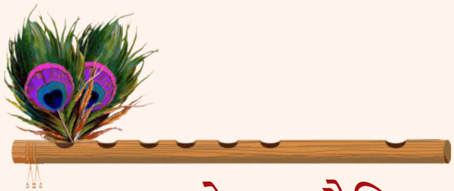

मेघा कौशिक
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

नैतिक मूल्यों का पतन

जैसे-जैसे समाज कथित रूप से विकसित हो रहा है, वैसे-वैसे सामाजिक मूल्यों की अविरल क्षति होती जा रही है। समाज के तथाकथित कमज़ोर वर्ग, जैसे महिलाएँ, किशोर आदि अब कर्तव्य भ्रष्ट होते जा रहे हैं। कुछ दशकों पहले तक दहेज़ हत्या के दंश को झेलते महिला वर्ग को सुरक्षित करने के लिए क़ानून की धाराएँ सख़्त की गईं और महिलाओं के विरुद्ध अपराध करने वालों से लेकर अपराधियों का समर्थन/संरक्षण करने वालों पर सख़्त दंड निश्चित किए गए। परन्तु अब यह स्थिति स्पष्ट होती जा रही है कि महिलाएँ एवं उनके परिवार भी इस सख़्त न्याय-प्रणाली का दुरूपयोग कर रहे हैं। भारतीय समाज रूप कंवर सती कांड से लेकर अब सोनम और मुस्कान जैसी आरोपित अपराधी महिलाओं ने अपराध या पीड़ित स्पेक्ट्रम को एक छोर से दूसरे छोर तक नाप दिया है। अब समाज में यह बहस चल रही है कि पुरुष वर्ग अब पीड़ित श्रेणी में आता जा रहा है। कानून और समाज से सुरक्षा मिलने के कारण कई धोखेबाज़, तिकड़मी महिलाओं की वजह से पूरी महिला जाति या वर्ग कटघरे में खड़ा हो गया है। कई पुरुषों ने अत्यधिक दबाव, मानसिक व भावनात्मक शोषण के कारण आत्महत्या को आसान विकल्प चुना। अब समय आ गया है कि पुरुषों के प्रति क़ानून को एकतरफा न होकर संतुलित, तर्कयुक्त और न्यायोचित बनाया जाए। कार्यालयों में कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न(रोकथाम निषेध व निवारण) अधिनियम 2013 में पीड़ित पुरुषों को भी उचित निराकरण का स्थान देना चाहिए। इसी कड़ी में किशोर वर्ग द्वारा किए गए भयानक अपराधों को भी दण्डित (वह भी उचित रूप से) किया जाना ज़रूरी है। रेयान इंटरनेशनल स्कूल में कुछ साल पहले एक बारहवीं कक्षा के छात्र ने एक सात साल के छात्र का गला काट दिया ताकि अवकाश घोषित हो जाए। निर्भया कांड में एक अवयस्क किशोर को फाँसी की सज़ा होने से इसलिए रह गई क्योंकि वह वयस्क नहीं था और ज्यूवेनाइल जस्टिस एक्ट की धाराएँ नरम पड़ गईं। उसे केवल तीन साल की

सज़ा दी गई, जबकि वही इस कांड का सूत्रधार था और उसी ने सबसे ज़्यादा अपराध किया था।

इन सब स्थितियों का निवारण केवल नैतिक मूल्यों को विद्यालयों, कॉलेजों और सोशल मीडिया पर दिखाने से नहीं होगा बल्कि इन मूल्यों का समय-समय पर मूल्यांकन करने की तीव्र आवश्यकता है। हमें शिक्षा की जटिलताओं और स्किल विकास से ज़्यादा मूल्यों के विकास की ज़रूरत है, जिसे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म जागरूकता, आत्म निर्भरता तथा सहानुभूति द्वारा पोषित किया जा सकता है।

महेश कुमार

लेखापरीक्षक

शिक्षा का बोझ

(एक मध्यमवर्गीय अभिभावक की पीड़ा पर आधारित)

बिकती शिक्षा रोज़ यहाँ पर
नहीं मिलता अच्छा ज्ञान है
स्कूल हैं बिक्री के घर
शिक्षा मुनाफे की खान है।
करके मासिक फ़ीस जमा भी
चैन नहीं वे पाते हैं
कभी स्पेशल डे, कभी पिकनिक
कभी डोनेशन के बुलावे आ जाते हैं।
बस्ते भारी, फीसें भारी,
भारी है उम्मीदों का बोझ,
परिवारों की कमर टूट गई
नहीं बची जीवन में मौज।

पढ़ाई हो या प्रोजेक्ट हो,
बच्चो का तो बस नाम है,
करते होमवर्क जाग-जाग कर
माँ-बाप को पलभर ना आराम है।
कभी यूनिफॉर्म का नया डिजाइन,
तो कभी किताब अलग छपती है,
हर साल नया सिस्टम आ जाए,

पुरानी किताबें अब किसे जंचती है?
सरकारी स्कूलों में सन्नाटा है,
ना माहौल, ना शिक्षक का मन होता है,
ना संस्कार, ना सुविधा मिलती,
बच्चों का पथ भ्रमित होता है।

निजी स्कूल पंख लगा कर
पैसा हवा में उड़ाते हैं,
विद्या को व्यापार बना कर,
ज्ञान की बोली लगाते हैं।
शिक्षा नहीं आसान रही अब,
ये दौड़ है, बोझ का नाम,
माँ-बाप भी अब छात्र बने हैं,
हर दिन दें नया इम्तिहान।

कार्यालय में हुई विभिन्न गतिविधियों से संबंधी छायाचित्र

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा इस कार्यालय की हिंदी निरीक्षण बैठक (26.12.24) के उपरान्त प्रमाण-पत्र प्राप्त करती हुई महानिदेशक महोदया सुश्री विनीता मिश्रा

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा इस कार्यालय की हिंदी निरीक्षण बैठक के दौरान माननीय सांसद महोदया को भेंट प्रदान करती हुईं महानिदेशक महोदया सुश्री विनीता मिश्रा

(हिंदी पखवाड़ा 2024 के आयोजन की झलकियाँ)

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में दीप प्रज्ज्वलन करते अधिकारीगण

अपने विचार व्यक्त करते हुए सहायक निदेशक सुश्री पूनम शर्मा

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

कार्यालय की हिंदी पत्रिका संवाद के षष्टम अंक के लिए आपके पत्र

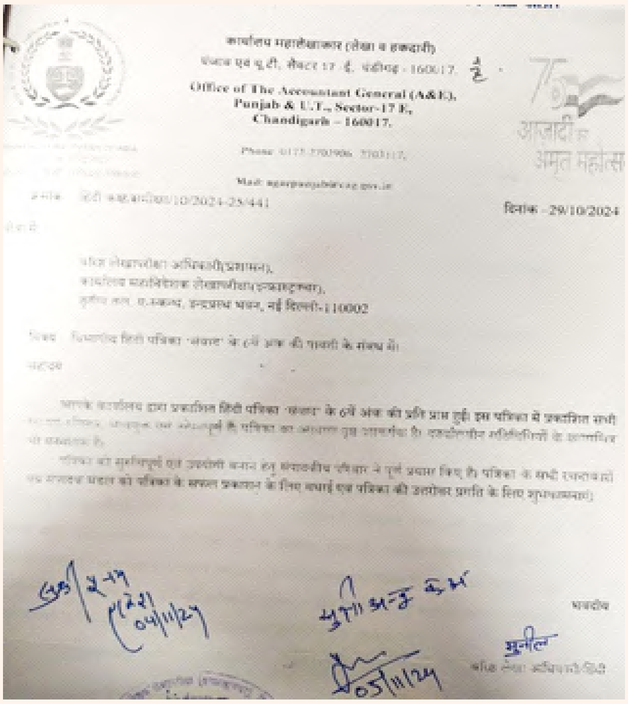
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
Office of The Accountant General (A&E),
Punjab & U.T., Sector-17 E,
Chandigarh – 160017.

दिनांक - 29/10/2024

नई दिल्ली-110002

भवदीय

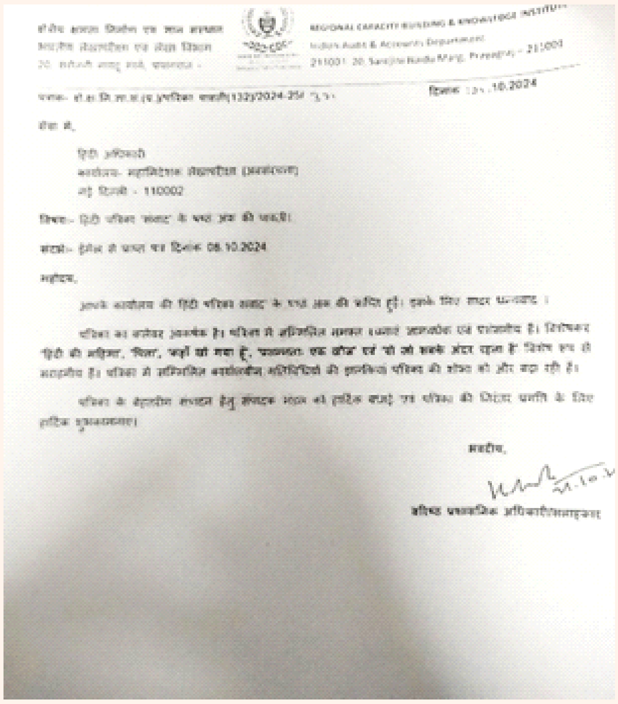
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department

दिनांक .10.2024

हिंदी अधिकारी
नई दिल्ली - 110002

संदर्भ- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 08.10.2024

महोदय,

भवदीय,

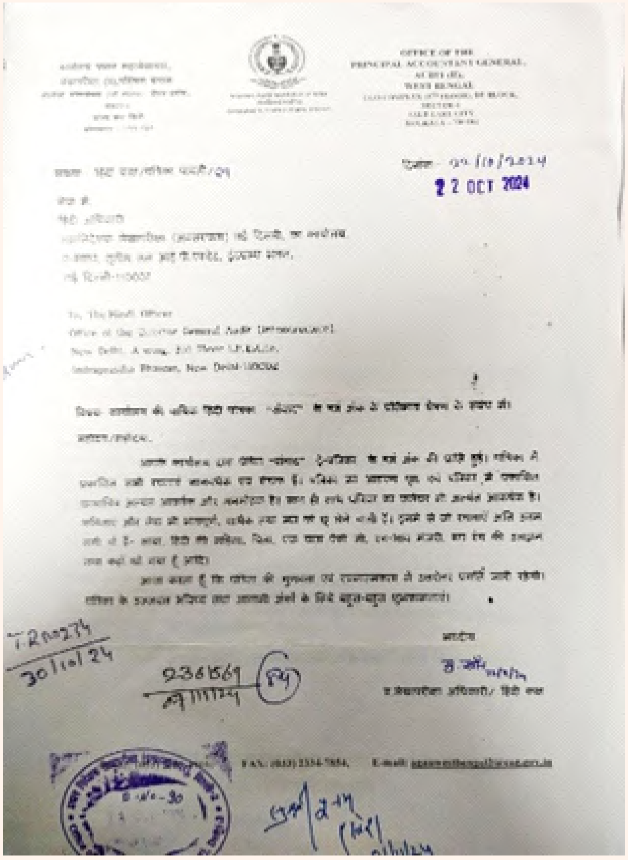
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
WEST BENGAL

22 OCT 2024

To, The Hindi Officer

भवदीय

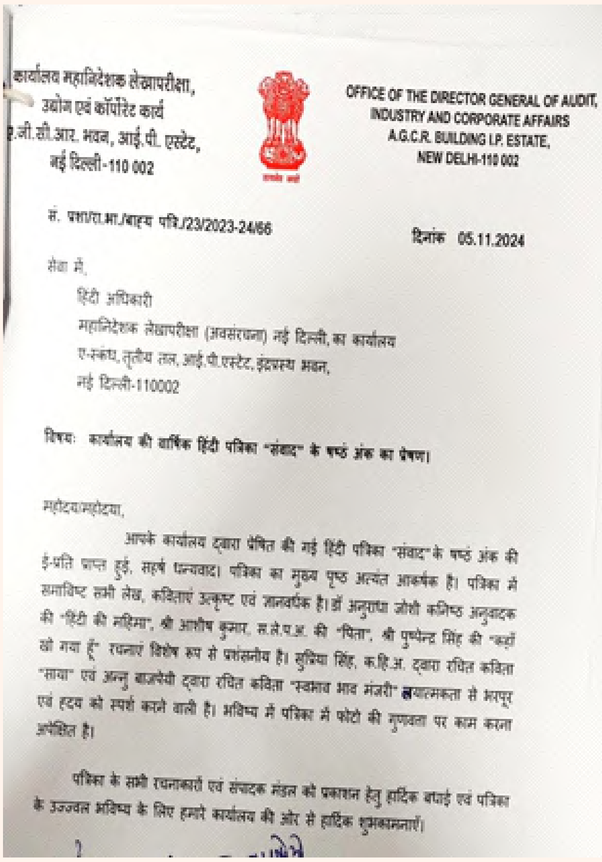
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110 002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT,
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
A.G.C.R. BUILDING I.P. ESTATE,
NEW DELHI-110 002

सं. प्रशा/रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2023-24/66

दिनांक 05.11.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना) नई दिल्ली, का कार्यालय
ए-स्कंध, तृतीय तल, आई.पी.एस्टेट, इंद्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्ली-110002

विषय: कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "संवाद" के षष्ठं अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी पत्रिका "संवाद" के षष्ठं अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। डॉ अनुराधा जोशी कनिष्ठ अनुवादक की "हिंदी की महिमा", श्री आशीष कुमार, स.ले.प.अ. की "पिता", श्री पुष्पेन्द्र सिंह की "कहाँ खो गया हूँ" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है। सुप्रिया सिंह, क.हि.अ. द्वारा रचित कविता "साया" एवं अन्नु बाजपेयी द्वारा रचित कविता "स्वभाव भाव मंजरी" रचनात्मकता से भरपूर एवं हृदय को स्पर्श करने वाली है। भविष्य में पत्रिका में फोटो की गुणवत्ता पर काम करना अपेक्षित है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

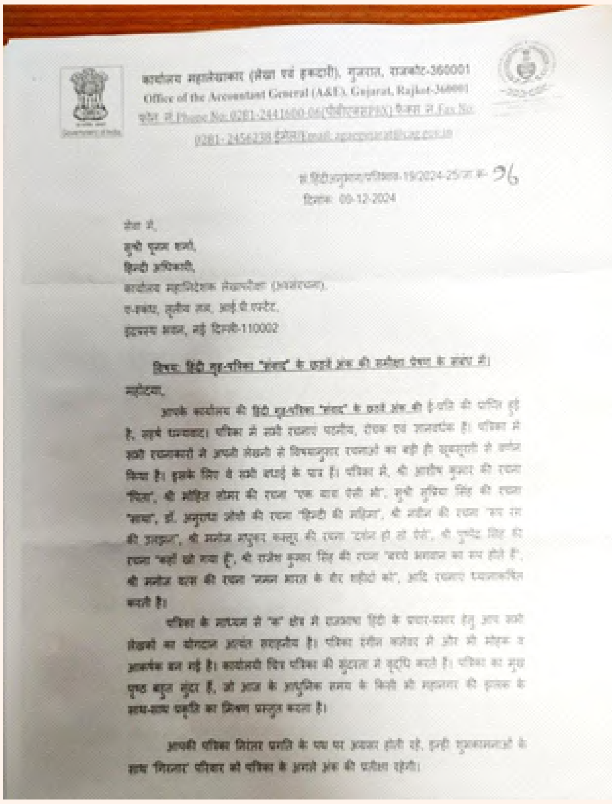

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360001
Office of the Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन नं Phone No. 0281-2441600-06(पीबीएक्सPBX) फैक्स नं Fax No. 0281-2456238 ईमेल/Email: agaegujarat@cag.gov.in

सं हिंदीअनुभाग/पत्रिका-19/2024-25/जा.क्र- 96
दिनांक: 09-12-2024

सेवा में,
सुश्री पूनम शर्मा,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना),
ए-ब्लॉक, तृतीय तल, आई.पी.एस्टेट,
इंद्रप्रस्थ भवन, नई दिल्ली-110002

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "संवाद" के छठवें अंक की समीक्षा प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "संवाद" के छठवें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री आशीष कुमार की रचना "पिता", श्री मोहित तोमर की रचना "एक बाबा ऐसी भी", सुश्री सुप्रिया सिंह की रचना "साया", डॉ. अनुरूपा जोशी की रचना "हिन्दी की महिमा", श्री नवीन की रचना "रूप रंग की उलझन", श्री मनोज मधुकर कस्तूर की रचना "दर्शन हो तो ऐसे", श्री पुष्पेंद्र सिंह की रचना "कहाँ खो गया हूँ", श्री राजेश कुमार सिंह की रचना "बच्चे भगवान का रूप होते हैं", श्री मनोज दास की रचना "नमन भारत के वीर शहीदों को", आदि रचनाएं ध्यानाकर्षित करती हैं।

पत्रिका के माध्यम से "क" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका रंगीन कलेवर में और भी मोहक व आकर्षक बन गई है। कलात्मक चित्र पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करते हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ बहुत सुंदर है, जो आज के आधुनिक समय के किसी भी महानगर की झलक के साथ-साथ प्रकृति का मिश्रण प्रस्तुत करता है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ 'गिरनार' परिवार को पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

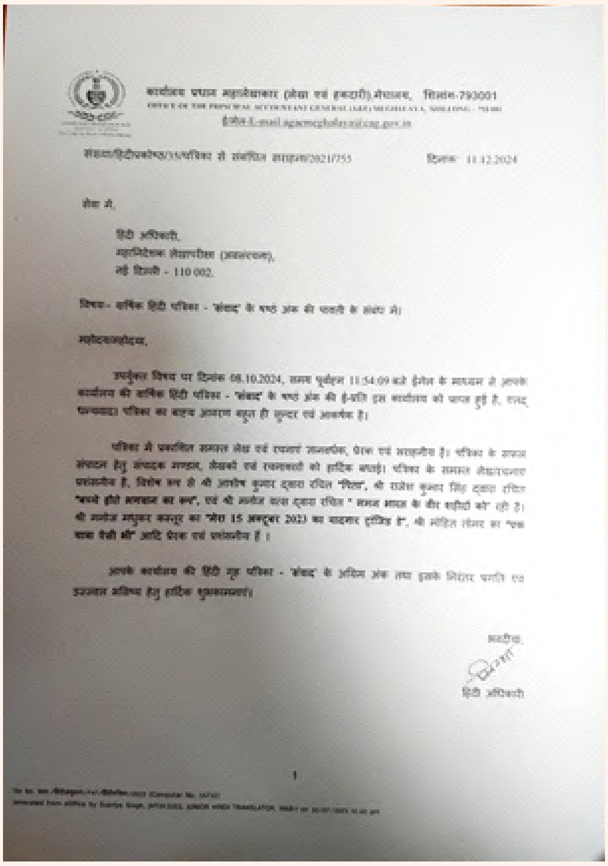

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),मेघालय, शिलांग-793001
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG - 793001
ई-मेल E-mail: agaemeghalaya@cag.gov.in

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित मामला/2021/755
दिनांक: 11.12.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना),
नई दिल्ली - 110 002.

विषय- वार्षिक हिंदी पत्रिका - 'संवाद' के षष्ठं अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय पर दिनांक 08.10.2024, समय पूर्वाह्न 11:54:09 बजे ईमेल के माध्यम से आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका - 'संवाद' के षष्ठं अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएं ज्ञानवर्धक, रोचक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के समस्त लेख/रचनाएं प्रशंसनीय हैं, विशेष रूप से श्री आशीष कुमार द्वारा रचित "पिता", श्री राजेश कुमार सिंह द्वारा रचित "बच्चे होते भगवान का रूप", एवं श्री मनोज दास द्वारा रचित " नमन भारत के वीर शहीदों को" रही है। श्री मनोज मधुकर कस्तूर का "मेरा 15 अक्टूबर 2023 का यादगार ट्रेकिंग है", श्री मोहित तोमर का "एक बाबा ऐसी भी" आदि रोचक एवं प्रशंसनीय हैं ।

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका - 'संवाद' के अगिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

1

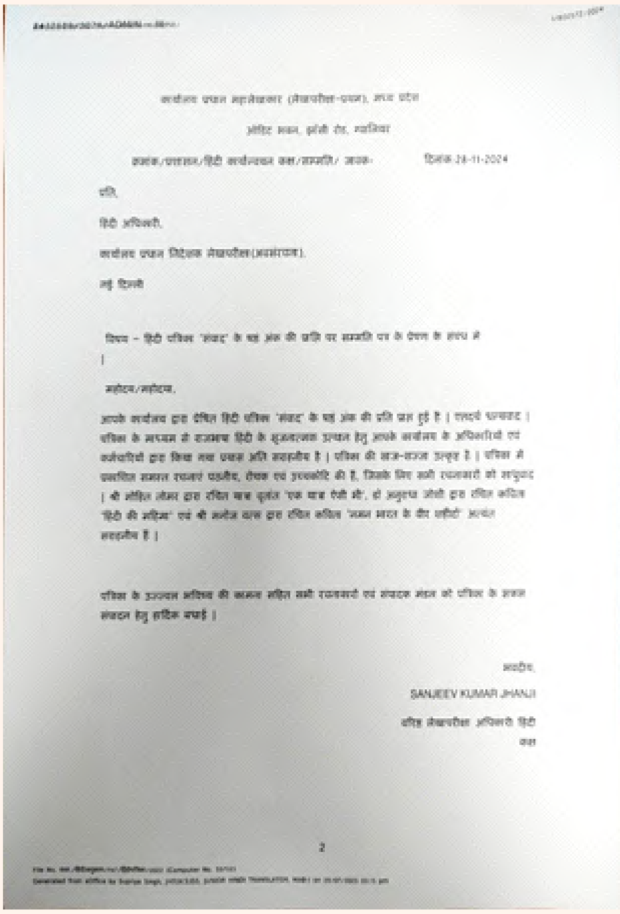

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्य प्रदेश
ऑडिट भवन, झांसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/ जाक्र-
दिनांक 28-11-2024

प्रति,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(अवसंरचना),
नई दिल्ली

विषय – हिंदी पत्रिका 'संवाद' के षष्ठ अंक की प्रति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में
।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'संवाद' के षष्ठ अंक की प्रति प्राप्त हुई है । तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है । पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है । पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय, रोचक एवं उत्कृष्ट की है, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद । श्री मोहित तोमर द्वारा रचित यात्रा वृतांत 'एक बाबा ऐसी भी', डॉ अनुरूपा जोशी द्वारा रचित कविता 'हिंदी की महिमा' एवं श्री मनोज दास द्वारा रचित कविता 'नमन भारत के वीर शहीदों' अत्यंत सराहनीय है ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई ।

भवदीय,
SANJEEV KUMAR JHANJI
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी हिंदी
कक्ष

2

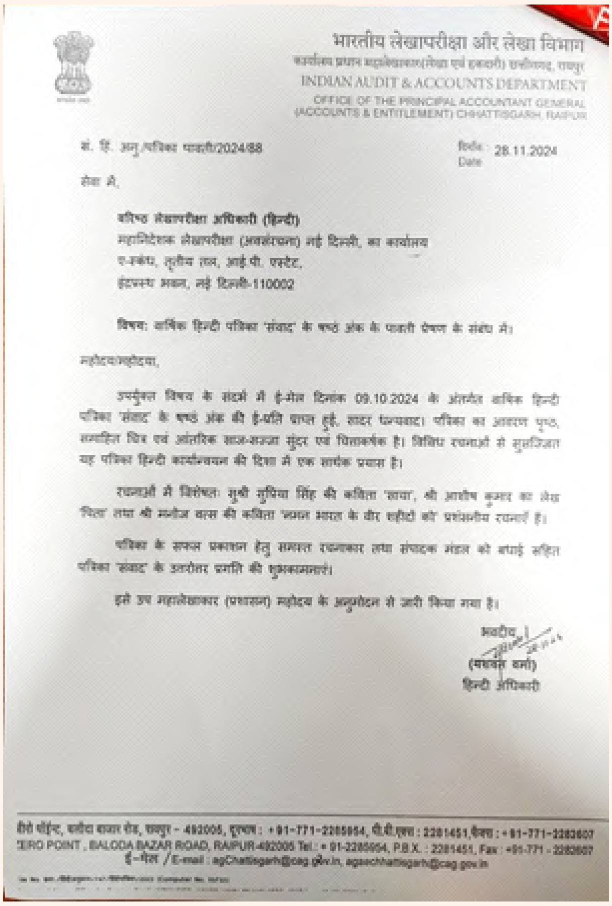

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(ACCOUNTS & ENTITLEMENT) CHHATTISGARH, RAIPUR

क्र. हिं. अनु./पत्रिका पावती/2024/88
दिनांक : 28.11.2024
Date

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना) नई दिल्ली, का कार्यालय
ए-ब्लॉक, तृतीय तल, आई.पी. एस्टेट,
इंद्रप्रस्थ भवन, नई दिल्ली-110002

विषय: वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संवाद' के षष्ठं अंक के पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय के संदर्भ में ई-मेल दिनांक 09.10.2024 के अंतर्गत वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संवाद' के षष्ठं अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सादर धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, समाहित चित्र एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं चित्ताकर्षक है। विविध रचनाओं से सुसज्जित यह पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

रचनाओं में विशेषतः सुश्री सुप्रिया सिंह की कविता 'साया', श्री आशीष कुमार का लेख 'पिता' तथा श्री मनोज दास की कविता 'नमन भारत के वीर शहीदों को' प्रशंसनीय रचनाएँ हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त रचनाकार तथा संपादक मंडल को बधाई सहित पत्रिका 'संवाद' के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

इसे उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,
(मधवंत शर्मा)
हिन्दी अधिकारी

जीरो पॉइंट, बलौदा बाजार रोड, रायपुर - 492005, दूरभाष : +91-771-2285954, पी.बी.एक्स : 2281451,फैक्स : +91-771-2282607
ZERO POINT , BALODA BAZAR ROAD, RAIPUR-492005 Tel.: + 91-2285954, P.B.X. : 2281451, Fax : +91-771 - 2282607
ई-मेल / E-mail : agChattisgarh@cag.gov.in, agaechhattisgarh@cag.gov.in

कार्यालय में आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला से सम्बंधित छायाचित्र

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित रणथम्बौर दौर की तस्वीर

कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियाँ

कार्यालय में आयोजित खेल प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने हेतु इस कार्यालय के अपर उप- नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय

विभागीय स्तर पर विभिन्न टेबल टेनिस प्रतियोगिताओं के विजेता, इस कार्यालय के श्री निखिल अरोड़ा, सहा.पर्यवेक्षक

GKI

IA & AD Inter Zone
Gujarat, Ahmedabad

डी.ओ.पी.टी के अंतर्गत केन्द्रीय सिविल सेवा सांस्कृतिक एवं खेल बोर्ड द्वारा आयोजित अंतर मंत्रालयी व्हीलचेयर लॉन टेनिस 2024-25 के दौरान इस कार्यालय की ओर से प्रतिनिधित्व कर पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राजेश रानल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्री फ़िरोज़ हसन, सहायक पर्यवेक्षक

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर 26 जून 2025 को दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित समारोह के कुछ छायाचित्र

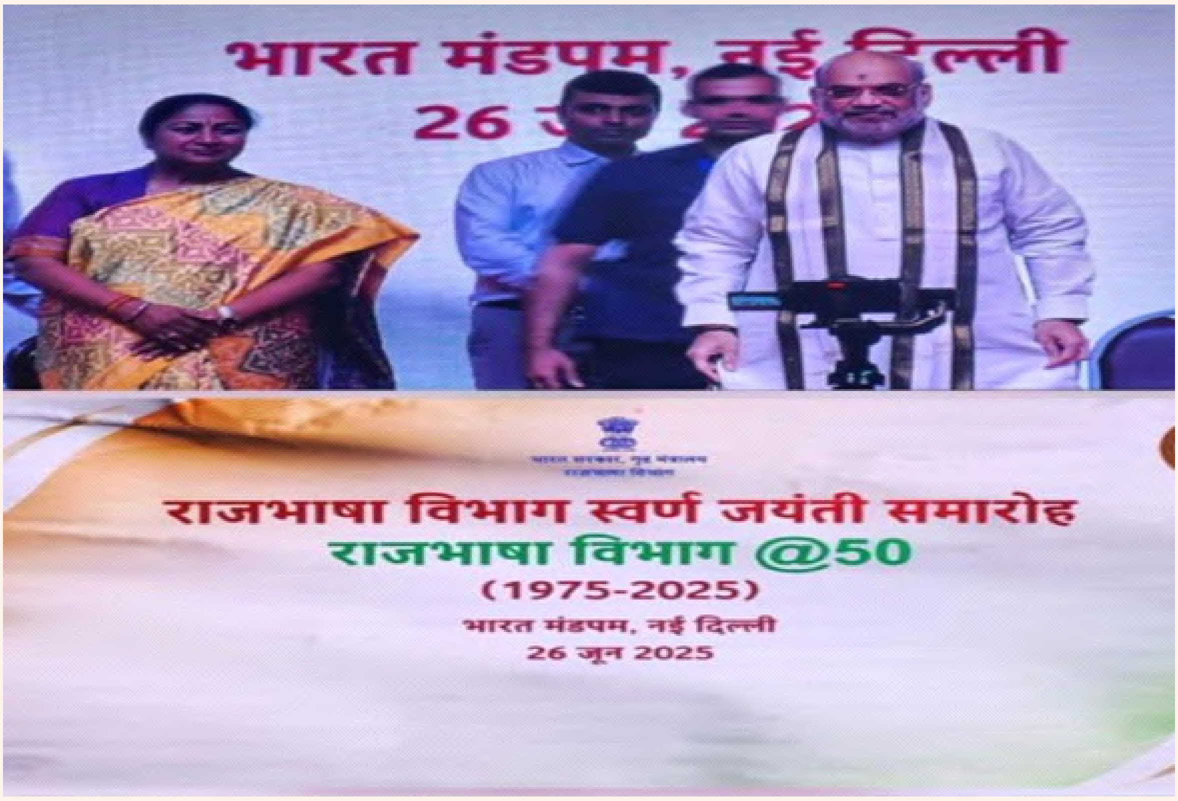

राजभाषा विभाग
स्वर्ण जयंती समारोह
राजभाषा विभाग @50
(1975-2025)

महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना)
नई दिल्ली का कार्यालय